।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अगस्त 2025 वर्ष 18 अंक 05

कुल पृष्ठ - 34 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

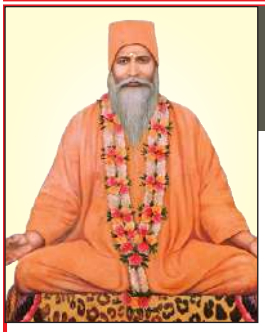

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

प्रातः कार्यक्रमानुसार सत्संग पहले भगत वाटूराम जी ने किया, फिर गुरु महाराज जी ने सत्संग कर समाप्त किया। उधर खाही गाँव के पंचो द्वारा भेजा गया भगत वाटूराम जी जो कि गुरु महाराज जी को लेने के लिए चक गाँव में आया था, वह गुरु महाराज जी के दर्शन कर वापस जाना ही भूल गया। बहुत प्रतीक्षा करने पर भी भगत वाटूराम जी को वापिस न आया देख कर खाही गाँव के भाई गोइन्दराम जी व भाई सोमनराम जी चक गाँव को आ पहुँचे। चक गाँव पहुँच कर गुरु महाराज जी को प्रणाम कर खाही गाँव के पंचों की ओर से प्रार्थना कर कहने लगे कि आप खाही गाँव पधारने की कृपा करें। यह सुन कर चक गाँव वालों ने कहा कि हम अभी एक महीना गुरु महाराज जी को जाने नहीं देंगे। इस पर गुरु महाराज जी चक गाँव वालों को कहने लगे कि आप के यहाँ पंद्रह दिन रह कर फिर खाही गाँव जायेंगे, भली खाही गाँव वालों की भी इच्छा पूर्ण हो। निर्णय हो जाने पर खाही गाँव वालों ने गुरु महाराज जी को कहा कि हे भगवन्! हम लोग तो अब जा रहे हैं बाकी भगत वाटूराम जी यहीं पर हैं। जब आज्ञा होगी तब हम लोग आपको लेने आ जायेंगे।

सायंकाल को सैर करने के लिये सन्त मेहमानों को साथ लेकर गुरु महाराज जी सन्त गंगाराम जी के स्थान पर गये।सन्त-भक्त मण्डली सहित गुरु महाराज जी को आया देख कर सन्त गंगाराम जी ने सब का यथायोग्य स्वागत-सत्कार कर कहा कि आपका शुभदर्शन पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है, प्रचलित प्रथानुसार एक दूसरे से कुशल समाचार पूछ कर सन्त गंगाराम जी ने दो भजन बोल कर थोड़ी देर सत्संग सुनाया, फिर गुरु महाराज जी भी मधुर भजनों को बोल कर सन्त गंगाराम जी से विदा होकर भाई चाँडूराम जी के स्थान पर गये।

गुरु महाराज जी को अपने स्थान पर आया देख कर भाई चाँडूराम जी बड़े प्रसन्न हुए। वहाँ पर भी वाग्विलास करते हुए सब सन्तों से मिल कर गुरु महाराज जी एक भजन बोल कर विदा लेकर चोइथबाल के स्थान पर पधारे। गुरु महाराज जी को आया देख कर स्वागत-सत्कार कर सजाए हुए आसन पर गुरु महाराज जी को बैठा कर स्वयं छेर-जामा (सिन्ध देश के भगतों का गाने-बजाने के समय पहने जाने वाला भेष) पहन कर सन्तों की महिमा के भजन गाये। फिर चोइथबाल जी को भी साथ लेकर गुरु महाराज जी ने सत्संग-मण्डप में आकर सत्संग आरम्भ करवाया। रात के सत्संग में सत् कर्मों की वार्ता चला कर कहने लगे कि निष्काम और सकाम भेद से दो प्रकार के कर्मों का वर्णन शास्त्रों में पाया जाता है। सांसारिक सुखों व शरीर, मन और प्रकृति द्वारा उत्पन्न दुःखों के नाश के लिये किये जाने वाले कर्म सकाम कर्म कहलाते हैं। केवल मोक्ष इच्छा निमित्त किये जाने वाले कर्म निष्काम कर्म कहलाते हैं। निष्काम कर्मों द्वारा अन्तः करण की शुद्धि होकर मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिए आहार शुद्ध करना चाहिये। आहार शुद्धि से व्यवहार शुद्ध होता है और तमोगुणवर्धक नाना

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

प्रकार के माँस-मछलियाँ आदि जो अभक्ष्य पदार्थ हैं, जिनके आहार करने से अन्तः करण मलिन होता है, उन पदार्थों का कभी भी सेवन नहीं करना चाहिये। सब में भगवान जान कर बिना कारण किसी जीव को कभी भी दुःख पहुँचाना नहीं चाहिये।

उपरोक्त मार्मिक शब्दों से सभा को प्रभावित करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि अगर आप माँस आदि से दूर रहोगे तो आपके द्वारा किये गये पिछले पापों को भी भगवान क्षमा कर देंगे। यह सुन कर न के बराबर लोगों ने माँस न खाने की प्रतिज्ञा कर हाथ ऊपर उठाए। माँस न खाने का वचन देने वाले लोगों को धन्यवाद देते हुए गुरु महाराज जी सारी सभा को कहने लगे कि अगर आप जीवन भर तक माँस नहीं छोड़ सकते हो तो जब तक हम आप के गाँव में हैं तब तक तो माँस से दूर रह कर पवित्र होकर सत्संग में आकर भगवान से मिलो। गुरु महाराज जी के वचनों का सम्मान करते हुए सब लोगों ने माँस न खाने की प्रतिज्ञा की। माँस न खाने के विषय में इस भजन के द्वारा और भी समझाया।

।। भजनु राग पहाड़ी ।।

मनुष खे कदहिं मासु खाइणु न घुरिजे।
अशुद्धि खाज में दिलि, लगाइणु न घुरिजे ।।टेक ।।
करणु जीव हिंसा, वदो पापु आहे।
गले कंहिंजे काती, वहाइणु न घुरिजे ।।१।।
बखे मासु जोई, नरिक में वञ सो।
वञी नरिक में जीउ, जलाइणु न घुरिजे ।।२।।
बखण मास वारो, पसूं आदि जग में।
मनुषु तनु पशुनि जिंअ, बणाइणु न घुरिजे ।।३।।
''कहे टेऊँ'' खोले, ग्रन्थ सन्त चवनि था।
कदहिं जीव कंहिंखे, सताइणु न घुरिजे ।।४।।

सत्संग सभा में उठ कर सूचना देते हुए मुखी बहरूराम जी ने कहा कि पंचायत की ओर से भी गाँव भर में ढिंढोरा दिया जायेगा। इस सूचना के बाद गुरु महाराज जी ने सत्नाम साक्षी की धुनि लगा कर रात को एक बजे सत्संग समाप्त किया।

इस तरह सायं प्रातः सत्संग का कार्य नियमानुसार चलता रहा दिन-प्रतिदिन गाँव वालों का प्रेम भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगा और दस-बारह मीलों की दूरी पर बसने वाली बस्तियों के लोग भी सत्संग सुनने के लिये आया करते थे। चक गाँव के भाई थाँवरदास, भाई जशनराम, भाई पहलूराम, भाई प्रीतमदास, श्री मोहनदास तथा और भी कई सज्जन गुरु महाराज जी के शिष्य बने। चक गाँववासियों के प्रेम को देखते हुए गुरु महाराज जी बीस-इक्कीस दिन चक गाँव में रहे।

तत्पश्चात् गुरु महाराज जी सायं चार बजे पंचों के साथ खाही गाँव को पैदल चले। चक गाँव के प्रेमी भी प्रेमी ही ठहरे, वे भी गुरु महाराज जी के पीछे चलने लगे। चोइथ बाल छेर-जामा पाकर आगे-आगे नाचता जाता था और कई लोग साथ में गाते-बजाते चले जा रहे थे। वहाँ रुस्तम गाँव के सेठ नोतनदास जी के भतीजे भाई आवतराम जी (जो कि बड़ा सेठ था) को तो ऐसी मस्ती चढ़ गई जो बाजार में पड़ी लकड़ियों के टुकड़े और पक्षियों के पंख उठा-उठा कर अपने सिर पर पहनी पगड़ी में डाल कर चोइथबाल के साथ नाचने लगा। सेठ आवतराम जी को नाचता देखकर लोग हैरान होकर एक दूसरे को कहने लगे कि देखो तो सही, आवतराम जी को क्या हो गया है। जो सेठ होकर अपना शान-मान भुलाकर सन्तों के आगे-आगे नाचता जा रहा है। न जाने सन्तों के राग व घुँघरूदार डण्डों में क्या प्रेम का जादू भरा हुआ है जो सेठ भी नाच रहा है। परन्तु हमारा भी मन चाह रहा है कि सन्तों के पीछे-पीछे चले जावें। इस तरह चक गाँव वासी प्रेम में गद्गद् होते हुए गुरु महाराज जी के साथ गाँव से बाहर बहुत कुछ दूर निकल आये। आखिर में सब को विदा करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि अब आप सब वापस जाओ और फिर रात के सत्संग में खाही गाँव आना (चक गाँव से थोड़ी दूरी पर खाही गाँव था)। हम सब पैदल यात्रा करते खाही गाँव में जायेंगे। फिर सब लोग विदा लेकर चले गये, आवतराम और कुछ लड़के गुरु महाराज जी के पीछे चलने लगे।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अगस्त 2025

वर्ष 18 | अंक 5

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंडु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

जब जग में सद्जन पर पापी करते अत्याचार,
धर्म-सत्य की रक्षा हेतु लेते प्रभु अवतार।
कंस ने कारागार में डाले देवकी अरु वसुदेव,
सात सुतों की हत्या की! कैसा अनर्थ हा देव!
भाद्र कृष्ण अष्टमी रात्रि में जन्में श्री भगवान,
टूटे बंधन सो गए प्रहरी रहा न कुछ भी भान।
द्वार खुल गए पिता ले गए सुत को यमुना पार,
नन्द ने कान्हा ले लीना दीनी कन्या सुकुमार।
कान्ह अवतरे पाप नाशने करने जग उद्धार,
चुन-चुन कर सब पापी मारे कंस पै किया प्रहार।
बन द्वापर के सूत्रधार अर्जुन को दीना ज्ञान,
गीता का अक्षर-अक्षर है सकल तत्त्व की खान।
गोविंद, माधव, गोपीवल्लभ, मन मोहन घनश्याम,
भव सागर को पार करे जो जपे प्रेम से नाम।
प्रभु का कृष्ण रूप भक्ति से जो नर-नारी ध्यावै,
कान्हा के रंग रंग कर मानों सकल पदारथ पावै।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1-2
02.	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जीवन दर्शन	4
03.	पतिव्रता स्त्री की शक्ति (स्वामी सर्वानन्द वचनामृत)	5-6
04.	जन्म मरण से छुटकारा पाने में सुख है	6
05.	प्रेम पुंज सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज	7-8
06.	एकादशी व्रत के प्रति निष्ठा	9
07.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज	10-11
08.	पूज्य गुरुजनों की पावन पुण्य स्मृति में	11
09.	मान-अपमान से परे संत महापुरुष (सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महिमा)	12
10.	मानसी सेवा का अद्भुत फल, पावन प्रसंग	13-14
11.	श्री गणेश जयंती पर चन्द्रमा का अदर्शन क्यों ?	15
12.	श्री गणपति जी को क्यों बैठाते हैं? भगवान श्रीगणेश को दुर्वा क्यो अतिप्रिय है?	16
13.	राधा नाम से संत की आंखे ठीक हो गई, मेरी बरसाने वारी राधे	17
14.	क्यों जरूरी है श्राद्ध-कर्म (पितृपक्ष विशेष)	18-22
15.	प्रेरक प्रसंग- भगवान का दोस्त, बुढ़ापा- जीवन का एक मीठा फल	23
16.	नाम जप की महिमा, ब्रज और कुम्भ में क्या सम्बन्ध है	24-25
17.	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पुण्यतिथि समाचार	26
18.	श्रीवृन्दावन धाम में सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया	27-28
19.	सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जन्मोत्सव, पुण्यतिथि समाचार	29
20.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज पुण्यतिथि समाचार, जन्माष्टमी समाचार	30
21.	अमरापुर गमन, भजन श्री हरकेश वधवा	31
22.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	32-33
23.	व्रत - पर्व - उत्सव + सूचना,	33
24.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीओ में समुझाणी)	34

एक नज़र में

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जीवन दर्शन

(30 जुलाई, पुण्यतिथि विशेष)

जन्म- सम्वत् 1954 , सिन्धी तारीख 12 , असू–शुक्ल चतुर्दशी , अक्टूबर 1897
माता- ईश्वरीबाई
पिता- सेवकराम
ग्राम- भिट्टशाह
तालुका- हैदराबाद , सिन्ध,
देश- भारत
गुरुदेव एवं मामा- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज बचपन से ही निर्मल, गम्भीर, सौम्य, शान्त प्रकृति के थे.
गुरु की गोद, प्यार आशीर्वाद और सत्संग भजन की प्राप्ति हुई.
बड़ों की, माता-पिता की सेवा, सन्तों की सेवा, गुरु की सेवा सब अनायास ही मिल गये.

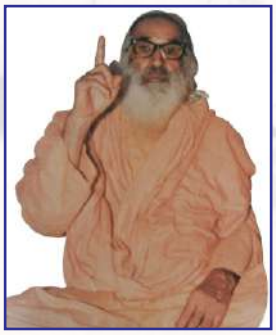

मंगलमय प्रेरणादायी जीवन–यात्रा

5 से 8 वर्ष तक गुरुदेव स्वामी टेऊँराम जी महाराज के साथ भजन सत्संग में साथ रहे। सत्संग, घर की सेवा करते रहे। अधिक समय ननिहाल में गुरुदेव एवं नाना श्री चेलाराम जी के साथ खेत दुकान पर जाते। साथ में स्वामी गुरुमुखदास भी रहते थे।

9 वर्ष – गुरु के पास रहना, आज्ञा सर्वोपरि समझकर तद्नुसार कार्य करते रहना, ढील न देना, सजग रहना आदि।

10 वर्ष में गुरुदेव के साथ सैर, नाम प्रचार में साथ रहे।

12 वर्ष में स्वामी ग्वाललाल, स्वामी गुरुमुखदास और भूरल भगत के साथ २ माह सिन्ध में ग्रामों का सैर करके पुनः गुरुदेव की शरण में पहुँच गये.

19 वर्ष में गुरु नाम दीक्षा- आचार्य श्री द्वारा नाम दीक्षा ६ वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात्

25 वर्ष से अमरापुर स्थान गुरु आश्रम की सेवा, कोठार का कार्य, आश्रम की देख-रेख और कुछ समय ऋषिकेश हरिद्वार जाकर एकांतवास में गुरु आज्ञा से रहना, पंजाब, काश्मीर, उत्तर प्रदेश से हिमायल के सभी तीर्थों का भ्रमण, सन्त संग, कविता बनाना आदि. चार ग्रंथ लिखे- चूड़ाला-शिखर ध्वज, वामन बलि, यम नचिकेता और साक्षी दर्शन।

45 वर्ष में प्रेम प्रकाश मण्डल का सेवा भार सम्हाला.

51 वर्ष में भारत आये, हरिद्वार आश्रम में सब सन्तों के साथ रहे. अहमदाबाद अजमेर कल्याण में प्रेम प्रकाश मण्डल के उत्सव मनाये. भारत के अलग-अलग नगरों तथा श्रीलंका जाकर नाम प्रचार किया.

56 वर्ष में जयपुर में गुरुदेव का पावन स्थान अमरापुर स्थान बनाने की सेवा में रहे.

60 वर्ष में गुरू की मूर्ति, सत्संग हाल तथा गुरु स्थान का सुन्दर स्वरूप स्थापित किया.

67 वर्ष में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का प्रकाशन किया. जगह-जगह ग्रंथ के पाठ पारायण करवाये.

75 वर्ष में गुरु की जीवन गाथा सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज का जीवन ग्रंथ प्रकाशित किया.

77 वर्ष में विदेश का सैर किया तथा १६ देशों का भ्रमण किया. और साथ ही प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पुनर्मुद्रण करवाया.

78 वर्ष में कुम्भ मेला प्रयाग में गये. कुल १८ कुम्भ मेले जीवन में किये. 5 हरिद्वार, 5 प्रयाग, 4 उज्जैन, 4 नासिक

79 वर्ष में गुरुदेव की शरण में समर्पित हुए.

उनका जीवन गीतामय था.

योगयुक्तो विशुद्धात्मा–विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा, कुर्वन्नपि न लिप्यते।

गुरु को जाने, गुरु को माने, गुरु आज्ञा में रहे समाने.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां–ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां–योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

सदैव गुरु को अनन्य भाव से पूर्ण श्रद्धा विश्वास के साथ प्रत्यक्ष देखते और आज्ञा लेकर कार्य करते थे.

21 जुलाई 1977 को नित्य गुरु शरण। ब्रह्मलीन श्रावण सिन्धी तारीख-४, शुक्ला पंचमी गुरुवार- सम्वत् २०३४, आयु-७६ वर्ष

23 जुलाई शनिवार को गंगाजी की गोद में शरीर समर्पित. शुक्ला सप्तमी, दिन- शनिवार।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश गुरूदेव से प्रार्थना करें – अब मेरा उद्धार करो
ताकि अन्तिम क्षणों तक मेरा मन नाम में लगा रहे व सांसारिक इच्छा का उदय न हो।

पतिव्रता स्त्री की शक्ति

स्वामी सर्वानंद वचनामृत

तीर्थार्थिनी तु या नारी पतिपादोदकं पिबेत् ।
तस्मिन् सर्वाणि तीर्थानि क्षेत्रानि च न संशय ।।

तीर्थों में स्नान करने की इच्छा से जो नारी तीर्थ यात्राएं करती है, परन्तु यदि वह नारी श्रद्धा से अपने पति के चरणों को धोकर उस जल से स्नान करती है और उस जल को पीती है, सिर पर चढ़ाती है, तो निश्चय समझो उसने सब तीर्थ कर लिये, इसमें कोई संशय नहीं है।

संकेतः- जनक नन्दिनी माता सीताजी की खोज करते हुए, श्री हनुमानजी अशोक वाटिका (लंकापुरी) में पहुंचे, वहां माता सीताजी को चरण स्पर्श कर अपना पूरा परिचय दिया और उनका दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुए। फिर सुर विजयी राक्षसराज रावण की अत्यन्त प्रिय वाटिका के फलों को खाया, तत्पश्चात् उस सुन्दर वाटिका को तहस नहस कर डाला, फिर कञ्चन नगरी लंकापुरी को जलाकर माता सीताजी के पास आये और उनसे प्रभु श्री रामचन्द्रजी के पास जाने की आज्ञा मांगी, जाते समय माता सीताजी की अत्यन्त दुःखी दशा देखकर श्री हनुमानजी ने हाथ जोड़कर कहा कि हे माता ! आपको इस दुष्ट राक्षस के कारागार में बन्द देखकर मुझसे सहा नहीं जाता। यदि आपकी आज्ञा हो तो अभी आपको अपने कंधों पर बिठाकर भगवान श्रीरामजी के पास ले चलूं। भगवान श्रीरामजी की कृपा से मुझे कोई भी नहीं रोक सकेगा !

श्री हनुमानजी की वीरोचित बातें सुनकर माता सीताजी बहुत प्रसन्न हुई, श्री हनुमानजी को आशीर्वाद और धन्यवाद देते हुए कहा, पुत्र हनुमान ! तुम्हारे बल तथा तेज को में अच्छी तरह से जानती हूं। तुम्हारे बल और बुद्धि का कोई थाह नहीं है। तुम अकेले ही रावण को सेना सहित मारकर मुझे श्री रामजी के पास ले चलने में समर्थ हो। परन्तु पुत्र ! तुम्हारे कन्धों पर बैठने से मेरा 'पतिव्रत धर्म' नाश हो जायेगा। मेरे पतिव्रत धर्म के नाश होते ही मेरे पति श्रीरामजी की शक्ति घट जायेगी, तुम्हारी और सारी वानर सेना की शक्ति क्षीण हो जायेगी और राक्षसों को जीतना कठिन हो जायेगा।

माता सीताजी के वचन सुनकर हनुमानजी के दिल को बड़ा धक्का लगा, उनकी मानसिक व्यथा को जानकर माता सीताजी ने कहा- पुत्र हनुमान ! जिस समय दुष्ट रावण मुझे हर लाया था, उस समय तो में विवश थी। पर इस समय तो मुझे यहां के असहनीय कष्टों पीड़ाओं से घबराकर या डरकर स्वेच्छा से तुम्हारे कंधों पर बैठकर चलना होगा, तुम्हारे शरीर का स्पर्श करना होगा, डरकर घबराकर, लोभ लालच में फंसकर या किसी भी प्रकार से मैं अपने पतिव्रत धर्म को छोड़ना या नाश करना नहीं चाहती। मैं सब कुछ सहूंगी पर धर्म को नहीं छोडूंगी, पुत्र हनुमान! तुम संशय में मत पड़ो। मैं अच्छी तरह से जानती हूं, तुम मेरे परम भक्त हो। मेरे पुत्र हो! मुझे अपनी माता से बढ़कर मानते हो, मैं भी तुम्हें पुत्र के समान समझती हूँ! तुम्हारी भक्ति से मैं अच्छी तरह से परिचित हूं। तुमने अपना सब कुछ भगवान श्रीरामजी के लिये अर्पण कर दिया है, मुझे खोजने के लिये तुमने अपने प्राणों की बाजी लगा दी है। तुम्हारे रोम रोम में राम सीता बस रहे हैं। यह सब मैं पतिव्रत धर्म के प्रताप से मैं सब जानती हूं । इतने पर भी तुम पर पुरुष हो, यदि मोह वश स्वेच्छा से तुम्हारे शरीर का स्पर्श करूंगी तो मेरा धर्मनाश हो

जायेगा। पुत्र हनुमान! धर्म के सूक्ष्म तत्वों को समझना बड़ा कठिन है, तुम भ्रम में मत पड़ो ! अति शीघ्र जाकर श्रीरामजी को सब समाचार सुनाओ, अन्तर्यामी भगवान श्रीरामजी स्वयं यहां आकर मुझे ले जायेंगे।

माता सीताजी के वचन सुनकर हनुमान का संशय नाश हो गया, प्रसन्न होकर माताजी से आशीर्वाद लेकर तुरंत श्रीरामजी के पास जा पहुंचे।

विधेर्विष्णोर्हराद्वापि, पतिरेकोऽधिको मतः ।
पतिव्रतायां देवेशि, स्वपतिः शिव ए च ।।

स्त्री के लिये ब्रह्मा, विष्णु और शंकर से भी बढ़कर अपना पति है, ऐसा मेरा निश्चित मत है। जिस नारी का शरीर, वाणी और मन अपने पति को छोड़कर और कहीं नहीं जाता, उस नारी को पतिव्रता समझना चाहिये। पतिव्रता नारी के चरणों की धूलि से धरती पवित्र हो जाती है। पतिव्रता को प्रणाम करने से सब पाप नाश हो जाते हैं।

संत मोहनलाल (मोनूराम) प्रेम प्रकाशी
श्री अमरापुर स्थान जयपुर

प्रेरणाप्रद प्रसंग

जन्म-मरण से छुटकारा पाने में सुख है

एक बार सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज गंगोत्री यमुनोत्री आदि उत्तराखण्ड के अन्य तीर्थों की यात्रा पर निकले. यात्रा से लौटते समय जब वे हनुमानचट्टी पर पहुँचे तो वहाँ एक वृद्ध माता से स्वामी जी की भेंट हुई. माता की अवस्था देखकर स्वामी जी ने उससे पूछा- माताजी, जैसा कि भारत में अनेक बड़े बड़े तीर्थ हैं और उनकी यात्रा भी सरल है फिर आप उन तीर्थों को छोड़कर इस दुर्गम यात्रा पर क्यों आयी हो? हम लोग जवान हैं तो भी सर्दी से थर थर काँप रहे हैं, यद्यपि आप बूढ़ी हो फिर भी आपको कोई परेशानी नहीं है, यह बड़ा आश्चर्य है.

इतना सुनकर वह वृद्धा कहने लगी-स्वामी जी! आप आश्चर्य न करें! मैं इससे पूर्व भी दो बार यहाँ आ चुकी हूँ यह मेरी तीसरी यात्रा है. मुझे तो कोई परेशानी महसूस नहीं हुई.

यह सुनकर स्वामी जी फिर पूछने लगे- माता जी, आपके इस तीन बार यात्रा करने का उद्देश्य क्या है?

वृद्धा कहने लगी- स्वामी जी! मैंने ऐसा सुना है कि जो महिला तीन बार श्री बद्रीनाथ की यात्रा करेगी, वह दूसरे जन्म में पुरुष होगी.

यह सुनकर स्वामी जी ने कहा- कि तीन बार यात्रा करने पर भी आपको पुरुष का ही तो जन्म मिलेगा या और भी कुछ होगा?

माता- न स्वामी जी! सिर्फ पुरुष का ही जन्म मिलेगा.

स्वामी जी- आप जो पुरुष बनने के लिये यात्रा कर रही हैं, भला यह तो बताओ कि पुरुषों में क्या सुख है? देखा जाये तो पुरुष महिलाओं से अधिक दुःखी हैं. इतना सुनकर जरा झिझक कर वृद्धा माता ने पूछा- भला आप ही बताओ कि सुख किसमे हैं?

वृद्धा की भावना देखकर स्वामी जी ने कहा- भाई सच्चा सुख है जन्म-मरण से छुटकारा पाने में! आगे तीर्थों की महिमा बतलाकर स्वामी जी ने वृद्धा से कहा- कि पुरुष बनने की इच्छा का परित्याग कर आप मोक्ष पाने की इच्छा रखो. तीर्थों में महान शक्ति है ऐसा करने से तुम्हें अवश्य मोक्ष मिल जायेगा. स्वामी जी की बात समझकर वह माता अत्यंत प्रसन्न हुई और स्वामी जी की आज्ञानुसार उसने वैसा ही किया.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं। फिर क्यों दूसरों को दुःखी करते हैं।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अवतरण दिवस नारियल पूर्णिमा पर संक्षिप्त जीवन-गाथा

प्रेम पुंज सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज

विकास के लिये होता है महापुरुषों का अवतरण! एक विकास बाहरी, जो भौतिक संसाधनों द्वारा पूरा होता है और दूसरा व्यक्ति के आन्तरिक चेतना का विकास! वह भौतिक संसाधनों से नहीं अपितु आध्यात्मिक स्त्रोतों से ही संभव होता है. ऐसे आध्यात्मिक, धार्मिक स्त्रोत संत-महात्माओं द्वारा ही विकसित होते हैं। जिसके माध्यम से जिज्ञासु उस परम रस का आस्वादन करक. अपने जीवन को आनन्दमय व भक्ति से परिपूर्ण कर देता हैं. सन्त-महापुरुषों का जीवन स्वयं के लिये नहीं अपितु मानवता की भलाई व निःस्वार्थ सेवा के लिये होता हैं संत तो स्वयं परमात्मा के ही अंश होते हैं. जो समय-समय पर इस पवित्र धरा धाम पर अवतार लेते हैं.

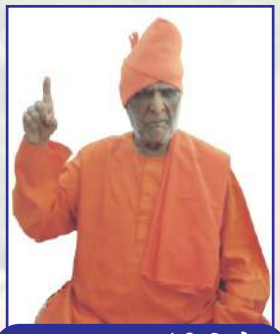

09 अगस्त, जयंती विशेष

महापुरुष अपने सुखों की तिलांजलि देकर समस्त संसार के जीव मात्र के कल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं. साथ ही इस धर्मप्राण भारतवर्ष में भक्ति, प्रेम व शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं.

ऐसे महापुरुषों की श्रेणी में हमारे परम पूज्य सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का स्थान वन्दनीय है.

नाम ही के अनुरुप शान्ति प्रकाश! जो सदैव भक्तों के हृदय में शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं, सबको शान्ति का पाठ पढ़ाते हैं. जिनका नाम लेने व दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को सहज ही परम शान्ति की प्राप्ति होती है.

ऐसी ही प्रभु सत्ता की महान विभूति परम तपस्वी महावैरागी सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज! जिनके परम शिष्य थे महान कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज! जिनका जन्म श्रावण मास सन् १६०७ नारियल पूर्णिमा (श्री सत्यनारायण), रक्षा बन्धन के पवित्र दिन सिन्ध के सक्खर जिले के चक गाँव में हुआ. आपके पिता का नाम श्री आसूदोमल एवं माता का नाम श्रीमती जुगलबाई था. दोनों बड़े संतोषी व संत सेवाभावी थे. जिसका प्रभाव 'महाराजश्री' के जीवन पर पड़ा.

मैत्री करुणा मुदिता, त्याग तपस्या रूप।
सतगुरु शान्तिप्रकाश जी, संत शिरोमणि अनूप।।

महाराजश्री का मन बाल्यावस्था में ही संसार से उपराम होकर परमात्म चिन्तन में स्थित हो गया. वे सदैव प्रभु भक्ति में तल्लीन रहते थे. समय के साथ महाराजश्री की प्रारम्भिक शिक्षा पाठशाला से शुरू हुई. किन्तु अचानक चेचक नामक बीमारी से उनके बाह्य चक्षुओं की ज्योति जाती रही. अनेक उपाय करने पर भी पुनः ज्योति वापस न आ सकी. तब माता-पिता उन्हें सिन्ध के प्रसिद्ध थल्हे वाले संत श्री साईं हरचूराम साहिब की शरण में ले आए. संतश्री ने कहा- चिन्ता की कोई बात नहीं! यह बड़ा महान संत बनेगा. संतश्री की वाणी सार्थक हुई.

समय पाकर महाराजश्री को भगवद् स्वरूप अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का दर्शन हुआ. कुछ समय तक आचार्यश्री का पावन सानिध्य, दर्शन व सत्संग, सेवा व सुमरण का लाभ प्राप्त हुआ. **'महाराजश्री की निष्ठा, सेवा, स्मरण, एकाग्रता को देखकर पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने मंत्र-दीक्षा देकर उन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया.'**

आचार्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामी जी श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर पूर्ण श्रद्धाभाव, उत्साह, निष्ठा के साथ सेवा स्मरण में सदैव संलग्न रहते थे.

कुछ समय पश्चात् आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से आज्ञा लेकर संस्कृत भाषा, गुरुवाणी, रामायण इत्यादि सत्शास्त्रों के अध्ययन हेतु अमृतसर, हरिद्वार, काशी आदि स्थानों पर जाकर शिक्षा ग्रहण की.

आध्यात्मिक चिन्तन-मनन के पश्चात् गुरु का

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति।

संदेश जन-जन तक पहुँचाया. पूरे विश्व में भ्रमण कर अपने ज्ञान द्वारा हजारों भक्तों को शान्ति व प्रेम का पाठ पढ़ाया. आचार्यश्री की आज्ञानुसार निष्काम सेवा कार्य में भी तत्पर रहकर मानव सेवा, समाज सेवा, मूक प्राणी अर्थात् जीवमात्र की सेवा करके अपने गुरु के यश कीर्ति को उज्जवल बनाया. आपने मृदुता, शीलता, शान्त सरल स्वभाव से सबको अपना बना लिया. कहते हैं ऐसे महापुरुषों के अवतार लेने से विश्व वसुन्धरा भी कृतार्थ हो जाती है.

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के परम शिष्य गो-पालक, श्रीकृष्ण स्वरूप, परोपकारी, कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्राद्रुर्भाव पर समस्त विश्व की धरा वन्दनीय बन जाती है. जिनके दर्शन मात्र से हृदय में प्रेम, भक्ति, ज्ञान की अलख स्वयं जाग्रत हो जाती है.

आप गुरु में पूर्ण आस्था व विश्वास रखते थे. गुरु को भगवान व इष्ट मानते थे। आप सदैव अपनी वाणी में कहते थे कि सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज साक्षात् रूप में आज हर समय हमारे साथ हैं. वे हमारी रक्षा करते हैं. प्रेरणा पुंज बनकर हमारे घट-घट में निवास करते हैं. उनके आशीर्वाद ने ही इस **'सूर श्याम दास'** को इस लायक बनाया।.

किसी काम के थे नहीं- छूता नहीं कोई छाँव।
कृपा भई गुरुदेव की- तो पूजन लागे पाँव।।

आप जब भी किसी बड़े संत-महापुरुषों से मिलते थे तो सदैव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ही परिचय देते थे। बड़ी बड़ी सत्संग सभाओं में एक बात बड़े ही डंके की चोट पर मर्मस्पर्शी स्वर में विनयपूर्वक कहते थे मेरे जैसे सूरदास का क्या मूल्य? **'यह तो सब कृपा हमारे महायोगी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की है, जिसे इतना लायक बनाया.'** ऐसी विनयशीलता थी आपकी सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज के प्रति! इन्हीं सद्गुणों के कारण आप ध्रुव तारे के समान सदैव वन्दनीय व पूजनीय बन गये.

समय की गति और समुद्र की लहरों को कोई रोक नहीं सकता. ऐसे में मृत्युलोक का सभी को परित्याग करना पड़ता है. आपने अपनी जीवन लीला का संवरण १४ अगस्त १९९२ को वायु मण्डल में कर श्री अमरापुर धाम ब्रह्मलोक प्रस्थान किया. आपकी ज्योति महाज्योति में समा गई. बहु प्रतिभाओं से विभूषित आपका अलौकिक जीवन हमारे लिये सदैव प्रेरणा व प्रकाश का पुंज बना रहेगा.

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

भजन

शांति प्रकाश सतगुरु, धरती पर हैं पधारे

तर्ज : बिगड़ी मेरी बना ले, जयपुर के रहने वाले.. (कव्वाली)

थल : **देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।**
शांतीप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

1. गद्गद् हुए पिताश्री, अवतार घर में आये
बजने लगीं बधाईयाँ, माता जुगल के द्वारे।।

2. पावन ये रक्षा बन्धन, पूनम की चाँदनी है।
इक चाँद है जमीं पर, दूजा गगन में प्यारे।।

3. गुरुदेव की छटा को घूँघट से चाँद देखे।
छिपता है बादलों में चंदा शर्म के मारे।।

4. चन्दा के संग तारे, यूँ झिलमिला रहे हैं।
दीपक से सतगुरू की, कोई आरती उतारे।।

5. आकाश से बरसती, बूँदे यूँ कह रहीं हैं।
फूलों की कर रहे हैं, बरसात देव सारे।।

6. घनघोर ये घटाएँ, ऐसे गरज रहीं हैं।
गुरु के जनम पे जैसे, 'मनोहर' बजे नगारे।।

देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।
शांतीप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

–स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अवतारी ऋषि, मुनियों महात्माओं से कोई विरले
विवेकी पुरूष ही लाभ प्राप्त करते हैं।

एकादशी व्रत के प्रति निष्ठा

स्वामी शांतिप्रकाश जन्मोत्सव पर विशेष

।।ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

हमारा भारत धर्मपरायण देश है । इसमें कर्म की प्रधानता है । किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता । समय पर फलीभूत अवश्य ही होता है । अतः सभी को व्रत नेम अनुष्ठान जरूर करने चाहिए । महापुरुष स्वयं तो करते ही है ओरो से भी सत्कर्म करवाकर उनका भी कल्याण करते है ।

ऐसे ही कर्मयोगी सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को एकादशी का व्रत बहुत ही प्यारा था । स्वयं आत्म तत्व में स्थित होने के बावजूद भी वह स्वयं एकादशी का व्रत नियम से रखते थे । यहाँ तक कि मेलों में भी हजारों भक्तों को एकादशी व्रत महिमा बताकर सभी से व्रत रखवाते थे ।

एक बार सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज विदेश लंदन की यात्रा पर गए थे । वहाँ पर सत्संग के माध्यम से 'एकादशी व्रत' की प्रेरणा दी ।

वहाँ संतो ने पूछा कि स्वामी जी ! आप एकादशी का व्रत क्यों रखते हैं..? आप तो सभी कर्मों से ऊपर उठे हुए हैं..?

तब स्वामी जी ने सरल भाव से कहा- सभी को प्रेरणा देने के लिए रखते है । हम करेंगे तो दूसरे भी करेंगे । अब आप ही बताओ..? यदि मैं यहाँ लंदन में एकादशी का व्रत नहीं रखता, तो ये लंदन वासी एकादशी का उपवास कैसे करते..? इन्हें क्या पता एकादशी का कितना महात्म्य है । संत महात्माओं को लोक कल्याण के लिए परमात्मा में स्थित होते हुए भी सत्कर्म करना चाहिए । व्रत अनुष्ठान करने चाहिए । जैसे श्री कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन को कहा-

''योगस्थः कुरू कर्माणि''

शुभ कर्म सभी को करने चाहिए । अपने लिए नही करे पर दूसरे के लिए जरूर करें । एकादशी व्रत रखने का बड़ा फल मिलता है । स्वामी जी अक्सर भक्त नामदेव जी का प्रसंग सुनाते थे नामदेव भक्त हमेशा एकादशी व्रत रखते थे और कहते थे कि- 'एकादशी जो व्रत राखे-काहे को तीर्थ जाई !'

जो पूर्ण श्रद्धा भाव से एकादशी का व्रत रखता है । उसे तीर्थ जाने की आवश्यकता नही । उसे इस व्रत के रखने से ही सब फल मिल जाते है । स्वामी जी एकादशी की बहुत महिमा गाते थे । उनकी प्रेरणा से ही सैकड़ों लोग व्रत रखते थे ।

ऐसे थे एकादशी व्रत के परम उपासक सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज ।

शत-शत नमन..। कोटि-कोटि वन्दन...

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहन लाल (संत मोनू राम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु शांतिप्रकाश पुण्यतिथि विशेष
स्वामी शांतिप्रकाश महान आ

स्वामी शांतिप्रकाश महान आ
जणु धरितीअ ते भगवान आ

1. **मिठड़ी जिनजी वाणी हुयड़ी,**
ज्ञान भरी समझाणी हुयड़ी,
कंदा पूर्ण सभ जा काम हा
2. **सभ कंहिं दिलि खे प्यारु डिनो,**
आए वये खे सत्कारु डिनो,
से त गुणनि अंदर गुणवान हा
3. **सतगुर टेऊँराम जनि शरणि वठी,**
राम सच्चे वया रंग रची,
सदा हृदय सां निष्काम हा
4. **सदा जोगिनि वारी जुगती हुई,**
पूर्ण तनि हरि भक्ती हुई,
कंदा भजन सुबह ऐं शाम हा

-संत हरिओमलाल,
प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिसको प्रेम-श्रद्धा नहीं है उसको उपदेश नहीं करना चाहिये ।

पावन पुण्य तिथि 19 अगस्त पर विशेष

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

(डॉ. दयाल 'आशा' सिंधु नगर)

प्रेम प्रकाश मण्डल के चतुर्थ पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म १३ वैसाख, सम्वत् १९८७ (सन् १९३० ई.) सिंध प्रदेश के सांघड़ जिले के घुंडण गाँव में पिता श्री हीरानन्द के घर में हुआ. उनकी माता का नाम मोतिलबाई था. उनके जन्म का नाम श्री लालचंद था. सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सांसारिक रिश्ते में उनके मामाजी थे. स्कूल की पढ़ाई के साथ उन्होंने धार्मिक विद्या भी प्राप्त की. सन् १९५२ ई. में उन्होंने अमरापुर स्थान, जयपुर में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से गुरु मंत्र लिया. वे सदैव उनके श्रीचरणों में रहकर संतों की सेवा भी करते रहे और धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन भी करते रहे. सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उनका नाम संत हरिदासराम रखा.

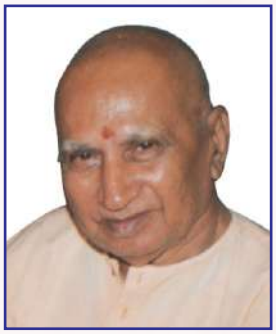

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज संत हरिदासराम को देश-विदेश के विभिन्न नगरों में नाम- प्रचार के लिए ले जाते थे. पहले संत हरिदासराम भजन गाते थे, तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सत्संग करते थे. संत हरिदासराम सत्गुरु महाराज के साथ हारमोनियम भी बजाते थे.

सन् १९९२ ई. में प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ब्रह्मलीन हुए, तब मंडल के संतों ने संत हरिदासराम महाराज को धर्मपीठ का उत्तराधिकारी बनाया. उन्होंने देश-विदेश के विभिन्न नगरों में भ्रमण कर नाम का प्रचार करते प्रेमियों की आत्मिक प्यास पूरी की. २६ अगस्त सन् २००० एकादशी के पावन दिन प्रभात को वे स्पेन में ब्रह्मलीन हुए. उनका पार्थिव शरीर अमरापुर स्थान जयपुर में लाया गया. सैकड़ों संतों व लाखों प्रेमियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाँजलि अर्पित की. मंडल के संतों ने संत भगतप्रकाश जी महाराज को सत्गुरु महाराज की गादी पर विराजमान किया.

परम्परा से प्रभावित सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने भी सिंधी एवं हिन्दी में काव्य रचना की. हिन्दी में उन्होंने थोड़े ही पद लिखे हैं.

गुरु महिमा : सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मन में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी. वे एक पद में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्र का चित्र प्रस्तुत करते हुए उनकी महिमा गाते कहते हैं-

जय जय जय टेऊँराम स्वामी,
कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी।

1. बुरे भले गर हैं तो तुम्हारे, जीते हैं हम तेरे सहारे।
हम हैं तुम्हारे तुम हो हमारे, बार बार लख बार नमामी।।
2. चेलाराम के तुम हो नन्दन, माँ कृष्णा के नित सुख वर्द्धन।
भव भय भंजन जन मन रंजन, बार बार लख बार नमामी।।
3. खण्डू नगर के नटवर नागर, अमरापुर के नित सुख सागर।
प्रेम प्रकाशी पंथ दिवाकर, बार बार लख बार नमामी।।
4. तुम ही सत् हो तुम ही चित हो, तुम ही आनन्द एक अनन्त हो।
तुम ही गति हो तुम ही मति हो, बार बार लख बार नमामी।।
5. तुम ही सद्गुरु तुम पितु माता, तुम ही हरी हर तुम ही विधाता।
हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामी।।

स्वामी हरिदासराम जी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से विनय करते अपनी मनोदशा का उल्लेख करते हैं और पाँच विकारों को दूर करने के लिए प्रार्थना करते हैं-

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी अपने जीवन को अमूल्य समझकर सदा श्रेष्ठ कर्म करें।

टेक : सद्गुरु सर्वानन्द हमें अभय दान दीजिये।
अभय दान दीजिये, कर्म काट लीजिये।।
1. हे अखण्ड हे अपार, ज्ञान ध्यान के भण्डार।
बार-बार नमस्कार, स्वीकार कीजिये।।
2. पतित पावन पाप हरो, सिर पै दया हाथ धरो।
अधम का उद्धार करो, भव से पार कीजिये।।
3. उमर सारी पाप भारी, करत करत मति है मारी।
क्षमा करो एक बारी, सुमति दान दीजिये।।
4. तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ, सूझत नहीं ठौर ठाऊँ।
बार-बार पड़त पाऊँ, शरण राख लीजिये।।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् स्वामी हरिदासराम जी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की स्तुति में आरती भी लिखी जो आज समस्त दुनिया में गाई जाती है.

सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी के महाराज के उपर्युक्त पदों व आरती से प्रतिभासित होता है कि उनके मन में सत्गुरु के प्रति कितनी श्रद्धा व निष्ठा थी. उनके इन पदों में वर्ण मैत्री, वर्ण संगति एवं छेकानुप्रास का भी प्रयोग हुआ है.

गुरुजनों की पावन पुण्य स्मृति में

प्रेम प्रकाश पंथ की वंदनीय विभूतियाँ

प्रेम प्रकाश पंथ की ये वंदनीय विभूतियाँ
गायी जा रही हैं जिनकी, धवल यश कीर्तियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

सत्गुरु टेऊँराम साधुता का सार हैं,
श्रेष्ठ वे आचार्य हैं, महिमा अपरम्पार है,
सिंध में सत् धर्म की, कर दी क्राँतियाँ,
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

स्वामी सर्वानन्द सत्गुर त्याग की हैं मूरति,
श्रेष्ठ उनकी है तपस्या और श्रेष्ठ है गुरभक्ति
श्रेष्ठ हैं उनकी सदा वे योगवाली युक्तियाँ,
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

प्रेम के सागर सत्गुरु शान्तिप्रकाश हैं,
दिव्य है जीवन उन्हो का, हर दिल में जिनका वास है,
प्रेरणाप्रद पावन हैं जिनके, उपदेश व स्मृतियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

स्वामी हरिदासराम सत्गुर, ज्ञान की करी गर्जना,
श्रेष्ठ है जिनकी सदा, आचार्य के प्रति अर्चना,
समझा गए सत्संग में, सबको सार-सार सूक्तियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

+ + + + + +

गुरुजनों का पावन पुण्य स्मरण

प्रथम पूज्य आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी।
तांके पाद पंकज में शत् शत् है प्रणाम जी।।

द्वितीय सर्वानन्द गुरु सर्व-आनन्द के धाम जी।
तांका पुण्य स्मरण सदा दे अनंत आराम जी।।

तृतीय शान्तिप्रकाश गुरु दें प्रेम पैगाम जी।
जाँके स्मरण मात्र से मिलता मन विश्राम जी।।

चतुर्थ हरिदासराम गुरु निर्मोही निर्मान जी।
पावन पुण्य स्मरण जाँका करे सर्व कल्यान जी।।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

मुक्ति किसके अधीन है ? मन से ही बन्धन मन से ही मुक्ति।
हमें पहले बाँधने वाली चीज को ही खोजना पड़ेगा। तब ही सही मायने में हम मुक्ति को जान पायेंगे।

!! मान अपमान से परे - संत महापुरुष !!

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महिमा पावन प्रसंग

संत-महापुरुषों में अनेक गुण विद्यमान होते हैं ! उनके उत्सवों को मनाने का एक मात्र उद्देश्य यही होता है कि हम उनके जीवन में से कुछ गुण सीख सके ! उन पर चलने का प्रयास करे ! तभी हमारा उत्सव मनाना सार्थक व सफल होता हैं !

सेवा करना कोई सरल कार्य नहीं होता हैं- 'सबते सेवक धर्म कठोरा' लेकिन स्वामी जी मे सेवा का गुण रोम- रोम में समाया हुआ था! वे 'सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज' की तन-मन-वचन से खूब सेवा किया करते थे ! स्वयं उनके उठने से पहले उठ जाते थे और स्नान, भोजन, लेखन कार्य आदि उनकी सारी सेवा स्वयं ही किया करते थे ! उनके सोने के बाद ही सोते थे ! श्री गुरु दरबार के प्रति भी उनकी बहुत सेवा निष्ठा थी। सेवा से कभी पीछे नही हटते थे।

ऐसे ही एक समय श्री अमरापुर दरबार में 'गुरू पूर्णिमा' के अवसर पर सभी छोटे संतों को अपनी-अपनी सेवाएं दी गई ! सभी अपनी-अपनी सेवा करके स्वामी जी के पास आये ! तब स्वामी जी के पूछने पर सभी ने बतलाया सेवा पूरी हो गई !

तब स्वामी जी स्वयं सब देखने गए और सारी सेवाएं अच्छे से हो गई थी पर भूलवश बाथरूम की साफ- सफाई नही हुई थी ! स्वामी जी ने किसी से कुछ ना कहकर स्वयं हाथ मे झाडू लेकर बाथरूम को साफ करने लगे ! छोटे विद्यार्थी संतों ने बहुत बार मना किया ! स्वामी जी हम अभी कर देते है ! हमसे भूल हो गयी ! हमे क्षमा कर दो !

किन्तु स्वामी जी ने कहा- अरे भाई ! हमे भी सेवा करने दो ! हम भी 'गुरू दरबार' के सेवादारी हैं ! तुम अपनी सेवा करों। कितनी बड़ी बात हैं..? कहना तो बहुत सरल होता है पर करना बहुत कठिन होता है ! स्वामी जी मे कथनी व करनी दोनो विद्यमान थी ! जो शिक्षा देते थे उसका अनुसरण भी करते थे।

ऐसा दृश्य देखकर हमारी आँखों से अश्रु धारा बह आयी ! कितने बड़े गुरु गद्दी के मालिक अर्थात् 'सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चतुर्थ पीठाधिश्वर' और कहाँ ऐसा तुच्छ सेवा कार्य ! हमें भी उनसे ऐसी सेवा करने की प्रेरणा लेनी चाहिए। धन्य- धन्य है ऐसे संत-महापुरुष.....

ऐसे अनेक सेवा के मार्मिक प्रसंग है स्वामी जी के जीवन मे देखने को मिले !

कुछ समय हमें भी उन तपस्वी महापुरुषों का दर्शन, सेवा व सानिध्य प्राप्त हुआ।

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' हमारा कोटि कोटि वन्दन..

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेष

आये श्याम आये

(सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

तर्ज : **तुम्हीं मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा**

स्थाई : दिवस है सुहाना घड़ी है सुहानी।
आये श्याम आए आये श्याम आए

1. यशोदा के घर में भयी भीड़ भारी,
सभी दे बधाई नर और नारी,
कोई दे मिठाई मक्खन कोई लाये।।
2. झूलना में झूले नंद का दुलारा,
सभी देख हर्षे उमंग है अपारा,
यशोदा के मन में खुशी ना समाए।।
3. सुन्दर श्याम मूरत बनी है निराली,
सभी देख मोहे मोहन की लाली,
देख रूप राशी चन्दा भी लजाए।।
4. सभी बृजवासी खुशियाँ मनाएँ,
ठोक ताल अपने नाचे और गाएँ,
इसी मौज मस्ती में हरी गीत गाए।।
आये श्याम आये आये....

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जैसे मछली का पानी ही जीवन है वैसे ही धर्म ही मनुष्य का जीवन है।

मानसी-सेवा का अद्भुत फल

बहुत पुरानी बात है, वृन्दावन में एक सन्त रहते थे। उनके पास बालकृष्ण की एक मूर्ति थी जिसे वह अपना पुत्र मानते थे और स्वयं को नंदबाबा समझकर श्रीकृष्ण की मानसिक सेवा किया करते थे।

श्रीकृष्ण का चरित्र ही इतना अद्भुत है कि उनसे आप अपना कोई भी नाता (पिता, पुत्र, स्वामी, पति, सखा, दास आदि) जो भी आपको अच्छा लगे, जोड़ सकते हैं...

तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावै।
ज्यों-त्यों तुलसी कृपालु चरन-सरन पावै।।

(विनय-पत्रिका ६८)

संत बाबा ब्रह्ममुहुर्त से लेकर रात्रि में शयन करने तक कन्हैया की मानसिक सेवा करते और मन से ही उन्हें सभी वस्तु अर्पण करते थे।

प्रातःकाल ही लाला (ब्रज में लड्डूगोपाल को लाला कहते हैं) को भूख लगी होगी-ऐसा सोचकर कन्हैया के लिए दूध, मलाई, मिश्री का मानसिक रूप से प्रबन्ध करते।

दोपहर में लाला से पूछते-क्या खायेगा ? वही तैयार करते। शाम को ब्यारु (रात्रि भोजन) कराते और रात को सोते समय दूध पिलाते।

गीता (९।२६) में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं..

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

अर्थात्-पत्र, पुष्प, फल, जल जो मुझे भक्ति से अर्पण करता है, उसे मैं सगुणरूप में प्रकट होकर प्रेमपूर्वक स्वाद के साथ खाता हूँ। लाला के प्रति बाबा का वात्सल्यभाव इतना प्रगाढ़ हो गया था कि वे हर समय उन्हीं के ध्यान में मग्न रहते, उसे लाड़ लड़ाते रहते थे।

रात्रि में लाला के बिस्तर के साथ अपना बिस्तर लगाते और उठकर देखते कि कहीं लाला ने मल-मूत्र तो

नहीं कर दिया और मानसिक रूप से ही बिछौना खराब होने की आशंका से उसे बदलते थे।

कभी भावना करते कि आज कन्हैया फल मांग रहा है। बाबा बाजार जाते और फल वाले के पास, हलवाई के पास और खिलौने वाले के पास जाकर नेत्र बंद करके खड़े हो जाते और हाथ जोड़ कर लाला को मन-ही-मन वस्तु अर्पण करके मन में संतुष्ट हो जाते कि मेरा लाला सभी चीजें पाकर प्रसन्न होकर खेल रहा है।

कभी उन्हें लगता कि नटखट कन्हैया मेरी दाढ़ी खींच रहा है और वे उसकी चुटकी लेकर अपनी दाढ़ी छुड़ाते।

संत बाबा यमुना-स्नान को जाते तो लाला को स्नान के लिए साथ ले जाते। एक बार बाबा के कपड़ों में उलझकर लाला यमुना में गिर गया तो वे अपने को धिक्कार कर रोने लगे और कहने लगे.. 'अब मान जा, और बता दे कि तू कहां पर है ?' तब उन्हें पानी में एक जगह लाला का आभास हुआ तो वे यमुना में कूद कर उसे बाहर लाए।

लाला को पौंछकर पुचकारते हुए नये वस्त्र पहनाये और रोने लगे। उन्हें लगा लाला उन्हें पुचकार रहा है। अब वे बड़ी सावधानी से लाला को किनारे पर बिठाकर लोटे से स्नान कराते थे।

एक बार बाबा के एक शिष्य ने उन्हें काशी आने का संदेश भेजा। बाबा जाने को तैयार हुए तो उन्हें लगा कि

उनका कन्हैया उन्हें जाने से रोक रहा है और कह रहा है.. 'मुझे छोड़ कर काशी न जाना, मुझे तुम्हारे साथ यहां बहुत अच्छा लगता है।'

बाबा कहते मेरा लाला अभी छोटा है, बड़ा भोला है, मुझे कन्हैया को छोड़कर कहीं नहीं जाना है।

धीरे-धीरे समय की गति के साथ बाबा का शरीर जीर्ण हो गया और उन्हें जरावस्था ने घेर लिया, पर उनका कन्हैया छोटा-सा लाला ही बना रहा।

एक दिन लाला की मानसी-सेवा करते-करते बाबा के जीर्ण शरीर से प्राण निकल कर पंचतत्त्व में विलीन हो गये। लाला बाबा के बगल में बैठा रह गया और बाबा उसके धाम को चले गए।

शिष्यों को जब बाबा के महाप्रयाण का पता लगा तो वे उनके शरीर को लेकर श्मशान आ गये और अंतिम संस्कार की तैयारी करने लगे। तभी वहां एक सात-आठ साल का सुन्दर, सलौना बालक धोती पहने व कंधे पर गमछा रखे पहुंचा। उसने कंधे पर एक मिट्टी का घड़ा रखा था जिसके ढक्कन पर अंतिम क्रिया की सामग्री रखी हुई थी।

आगन्तुक बालक ने शिष्यों से कहा.. 'ये मेरे पिता हैं, मैं इनका मानस पुत्र हूँ, इसलिए इनका अंतिम संस्कार करने का मेरा अधिकार है'।

पिता की अंतिम इच्छा पूरी करना मेरा धर्म है। मेरे पिता की बहुत दिनों से गंगा स्नान करने की इच्छा थी, परन्तु मेरे छोटे होने के कारण वे मुझे छोड़कर कहीं नहीं गये, इसलिए मैं यह गंगाजल का घड़ा लेकर आया हूँ।

सभी उपस्थितजन उसकी बात सुनकर स्तब्ध रह गये। उस बालक ने बाबा के शरीर को स्नान करा कर चन्दन लगाया, फूलमाला आदि पहना कर उनका पूजन-वंदन किया फिर परिक्रमा कर अंतिम क्रिया की। सभी लोग देखते रह गये, किसी की भी उसे रोकने-टोकने की हिम्मत नहीं हुई। कुछ ही देर बाद वह बालक अदृश्य हो गया।

तब जाकर शिष्यों को याद आया कि बाबा के तो कोई पुत्र था ही नहीं, हां, बालकृष्ण को ही वे अपना पुत्र मानते थे। कन्हैया ही पुत्र बनकर आया और पुत्र धर्म का निर्वाह कर चला गया।

गीता (।१२।७) में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है..

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ।।

अर्थात्. 'हे अर्जुन ! जो मेरी सेवा करता है, मुझमें चित्त लगाता है, उसे मैं मृत्यु रूप संसार-सागर से पार कर देता हूँ अर्थात् वह शीघ्र ही मुझे प्राप्त हो जाता है।'

भगवान ने गीता के अपने वचन **'योगक्षेम वहाम्यहम्'** के अनुसार संत बाबा को सायुज्य-मुक्ति प्रदान कर दी ।

संकलित

प्रेरक प्रसंग

एक सन्यासी घूमते-फिरते एक दुकान पर आये । दुकान में अनेक छोटे-बड़े डिब्बे थे, एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए सन्यासी ने दुकानदार से पूछा, इसमें क्या है ? दुकानदार ने कहा-इसमें नमक है! सन्यासी ने फिर पूछा, इसके पास वाले में क्या है ? दुकानदार ने कहा, इसमें हल्दी है! इसी प्रकार सन्यासी पूछते गए और दुकानदार बतलाता रहा, अंत में पीछे रखे डिब्बे का नंबर आया, सन्यासी ने पूछा उस अंतिम डिब्बे में क्या है? दुकानदार बोला, उसमें राम-राम है! सन्यासी ने पूछा, यह राम-राम किस वस्तु का नाम है! दुकानदार ने कहा-महातम्न्! और डिब्बों में तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं है, पर यह डिब्बा खाली है, हम खाली को खाली नहीं कहकर राम-राम कहते हैं । सन्यासी की आंखे खुली की खुली रह गई । ओह, तो खाली में राम रहता है । भरे हुए में राम को स्थान कहां ? लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी बातों से जब दिल-दिमाग भरा रहेगा तो उसमें ईश्वर का वास कैसे होगा ? राम यानि ईश्वर तो खाली याने साफ-सुथरे मन में ही निवास करता है । एक छोटी सी दुकान वाले ने सन्यासी को बहुत बड़ी बात समझा दी ।

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

पहले संतो के प्रवचन श्रवण करें,
फिर उनका चिन्तन करें तो आपको आनंद की उपलब्धि होगी ।

भगवान श्रीगणेश चर्तुथी 27 अगस्त पर विशेष

श्री गणेश जयंती पर चन्द्रमा का अदर्शन क्यों ?

एक बार की बात है, कैलाश के शिव-सदन में ब्रह्माजी शिवजी के पास बैठे थे. उसी समय वहाँ देवर्षि नारद पहुँचे. उनके पास एक अतिशय सुन्दर फल था. जो देवर्षि ने उमानाथ के कर-कमलों में अर्पित कर दिया. फल को पिता के हाथ में देखकर गणेश और कुमार कार्तिकेय दोनों बालक उसे आग्रहपूर्वक माँगने लगे. तब शिव ने ब्रह्माजी ने पूछा- 'ब्रह्मन्! फल एक ही है और इसे गणेश एवं कुमार दोनों चाहते हैं; आप बतायें, इसे किसे दूँ?' चतुर्मुख ने उत्तर दिया- 'प्रभो! छोटे होने के कारण इस एकमात्र फल के अधिकारी तो षडानन ही हैं.'

गंगाधर ने फल कुमार को दे दिया. किंतु पार्वतीनन्दन गणेश सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी पर कुपित हो गये. लोकपितामह ने अपने भवन पहुँचकर सृष्टि-रचना का प्रयत्न किया तो गजवक्त्र ने अद्भुत विघ्न उत्पन्न कर दिया. वे अत्यन्त उग्ररूप में विधाता के सम्मुख प्रकट हुए. विघ्नेश्वर के भयानकतम स्वरूप को देखकर विधाता भयभीत होकर काँपने लगे. गजानन की विकट मूर्ति एवं ब्रह्मा का भय और कम्प देखकर चन्द्रदेव अपने गणों के साथ हँस पड़े. चन्द्रमा को हँसते देख गजमुख को बड़ा क्रोध आया. उन्होंने चन्द्रदेव को तुरंत शाप दे दिया- 'चन्द्र! अब तुम किसी के देखने योग्य नहीं रह जाओगे और यदि किसी ने तुम्हें देख लिया तो वह पाप का भागी होगा.

अब तो चन्द्रमा श्रीहत, मलिन एवं दीन होकर अत्यन्त दुःखित हो गये. सुधाकर के अदर्शन से देवगण भी दुःखित हुए. अग्नि और इन्द्र आदि देवगण देवदेव गजानन के समीप पहुँचकर उनकी भक्तिपूर्वक स्तुति करने लगे.

देवताओं के स्तवन से प्रसन्न होकर गजमुख ने कहा- 'देवताओं! मैं तुम्हारी स्तुति से सन्तुष्ट हूँ. वर माँगो, मैं उसे अवश्य पूर्ण करूँगा.'

देवता बोले- 'प्रभो! आप चन्द्रमा पर अनुग्रह करें, हमारी यही कामना है.' गणेशजी ने कहा- 'देवताओं! मैं अपना वचन मिथ्या कैसे कर दूँ? पर शरणागत का त्याग भी सम्भव नहीं.' अतः तुम लोग मेरी बात सुनो- 'जो जानकर या अनजान में ही भाद्र-शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र का दर्शन करेगा, वह अभिशप्त होगा. उसे अधिक दुःख उठाना पड़ेगा.'

परमप्रभु द्विरदानन के वचन सुन देवगण अत्यन्त मुदित हुए. उन्होंने पुनः प्रभु-चरणों में प्रणाम किया. तदनन्तर वे चन्द्रमा के पास पहुँचे और उनसे कहा- 'चन्द्र! गजमुख पर हँसकर तुमने अपनी मूढ़ता का ही परिचय दिया है. तुमने परम प्रभु का अपराध किया और त्रैलोक्य संकटग्रस्त हो गया. हम लोगों ने त्रैलोक्यनायक परब्रह्मस्वरूप सर्वगुरु गजानन प्रभु को बड़े यत्न से सन्तुष्ट किया. इस कारण उन दयामय ने तुम्हें वर्ष में केवल एक दिन भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी को अदर्शनीय रहने का वचन देकर अपना शाप अत्यन्त सीमित कर दिया. तुम भी उन करुणामय की शरण लो और उनकी कृपा से शुद्ध होकर यश प्राप्त करो.'

देवेन्द्र ने सुधांशु को गजानन के एकाक्षरी मन्त्र का उपदेश किया और फिर देवगण वहाँ से चले गये.

सुधाकर शुद्ध हृदय से परम प्रभु गजमुख की शरण हुए. वे पुण्यतोया जाह्नवी के दक्षिण तट पर गजानन का ध्यान करते हुए उनके एकाक्षरी मन्त्र का जप करने लगे. चन्द्रदेव ने गणेश को सन्तुष्ट करने के लिये बारह वर्ष तक कठोर तप किया. इससे आदिदेव गजानन प्रसन्न हुए और उन परम प्रभु गजानन के वर- प्रभाव से सुधांशु पूर्ववत् तेजस्वी, सुन्दर एवं वन्द्य हो गये.

इस तरह यह पौराणिक घटना यह सन्देश देती है कि अपने से बड़ों का उपहास करना अमंगलकारी ही होता है.

(श्री गणेशपुराण, उपासना खण्ड)

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

हमें सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए पर अनुष्ठान अपने ही धर्म का करना चाहिए।

श्री गणपती जी को क्यों बैठाते है ?

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

हम सभी प्रत्येक वर्ष ''भगवान श्री गणपती जी'' की स्थापना करते हैं ! साधारण भाषा में श्री गणपती को बैठाते हैं ! लेकिन क्यों.. ? किसी को मालूम है क्यों...? नही ना... चलो आज पढ़ते है !

हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार महर्षि वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना की है ! लेकिन लिखना उनके वश का नहीं था ! अतः उन्होंने इस कार्य के लिए श्री गणेश जी की आराधना की और गणपती जी से महाभारत लिखने के लिए प्रार्थना की । श्री गणपती जी महाराज ने सहमति दी और दिन-रात लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ ! इस कारण श्री गणेश जी को थकान तो होनी ही थी ! लिखने के दौरान उन्हें पानी पीना भी वर्जित था !

अतः गणपती जी के शरीर का तापमान बढ़े नहीं ! इसलिए वेदव्यास जी ने उनके शरीर पर मिट्टी का लेप किया और भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी की पूजा-अर्चना की..

मिट्टी का लेप सूखने पर भगवान श्री गणेश जी के शरीर में अकड़न आ गई ! इसी कारण श्री गणेश जी का एक नाम पार्थिव गणेश भी पड़ा !महाभारत का लेखन कार्य १० दिनों तक चला और अनंत चतुर्दशी को लेखन कार्य संपन्न हुआ

वेदव्यास जी ने देखा कि श्री गणपती महाराज का शारीरिक तापमान फिर भी बहुत बढ़ा हुआ है और उनके शरीर पर लेप की गई मिट्टी सूखकर झड़ रही है ! तो वेदव्यास ने उन्हें जल में डाल दिया ! जिससे उन्हें ठंडक मिल सके !

इन दस दिनों में महर्षि वेदव्यास ने ''श्री गणेश जी'' को खाने के लिए विभिन्न पदार्थ दिए..! विशेष गणपति जी को मोदक प्रिय है ! इसलिए मोदक का भोग लगाया जाता है ! तभी से गणपती बैठाने की प्रथा चल पड़ी...! आज भी वह परम्परा चालू है...! इसे विधिवत करने से सर्व मनोरथ भी सिद्ध होते है ! बस - अगर मान मर्यादाओ को ध्यान देकर ये उत्सव मनाएंगे तो बापा गणपति जी हम सब पर प्रसन्न होंगे और हमें सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देंगे !

१० दिनों तक श्री गणेश जी की आरती व भोग प्रसाद जरूर लगाएं...! गणपति जी का विसर्जन साफ सुथरी बड़ी नदी, तालाब या सागर-समुद्र में ही करें... छोटे स्थानों पर नही करे ! उत्सव भक्ति भाव से मनाना चाहिए ! फिल्मी गाने-नाच- गाने आदि नही होना चाहिए..!

सभी पर श्री गणपति महाराज का आशीर्वाद बरसता रहे..

गणपति बप्पा मोरिया.....मंगलमूर्ति मोरिया...

भगवान श्री गणेश जी को दूर्वा क्यों अति प्रिय हैं.. ?

पौराणिक कथा के अनुसार एक बार अनलासुर नामक राक्षस का अत्याचार बहुत अधिक बढ़ गया था । जिसके कारण ऋषिगण, देवता, इंसान और पशु-पक्षी ये सभी परेशान हो रहे थे । इस असुर के आतंक को रोकने के लिए सभी भगवान शिव जी के पास जाकर विनती करने लगें वे उन्हें इस दैत्य से हमारी रक्षा करे। भगवान शिव जी उनकी विनती सुनकर कहते हैं - इसका उपाय तो केवल गणेश के पास हैं ।

फिर सभी ने श्री गणेश जी से अनलासुर का संहार करने की प्रार्थना की । जिसे गणेश जी ने स्वीकार किया । फिर भगवान श्री गणेश जी का अनलासुर के साथ युद्ध हुआ !

इस युद्ध में श्री गणेश जी अनलासुर को निगल जाते हैं । इस दैत्य को निगलने के बाद भगवान गणेश जी के पेट में भयानक जलन होने लगी । जिसे देखकर सभी देवतागण चिंतित हो गए । तब कश्यप ऋषि ने दूर्वा की २१ गांठ बनाकर भगवान श्री गणेश को खाने के लिए देते हैं। दूर्वा को खाते ही उनके पेट की जलन खत्म हो जाती हैं ! कहते है दूर्वा की तासीर ठंडी होती है !

प्रसन्न होकर श्री गणेश जी कहते हैं जो भक्त इस प्रकार ''दूर्वा'' अर्पित करेगा, उसके ऊपर उनकी कृपा बनी रहेगी । कहते हैं कि- तभी से भगवान श्री गणेश जी को दूर्वा अर्पित किया जाने लगा !

दूर्वा एक प्रकार का घास होता है । जिसमें ठंडक होती है, जो भगवान श्री गणेश जी को बहुत प्रिय हैं ! कहते हैं कि- श्री गणेश जी को दूर्वा चढ़ाना बहुत ही शुभ और लाभकारी हैं ! सभी देवों में श्री गणेश जी एकमात्र ऐसे देवता हैं ! जिन्हें दूर्वा अर्पित की जाती हैं !

धर्म शास्त्रों में कई जगह ऐसा उल्लेख आया हैं कि- श्री गणेश जी को दूर्वा चढ़ाने से जीवन में आ रही विघ्न-बाधाओं का नाश होता हैं ! ऐसी अनेक कथाएं भगवान श्री गणेश जी की शास्त्रों में प्रचलित है !

प्रेम प्रकाशी सन्त मोनूराम जी, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश ज्ञानवान् महात्मा लोग समस्त सांसारिक कार्यों को करते हुए दिखलाई जरूर पड़ते हैं परन्तु वे सदा माया से निर्लिप्त रहते हैं।

राधा नाम से संत की आँखे ठीक हो गई

एक संत थे वृन्दावन में रहा करते थे, श्रीमद्भागवत में बड़ी निष्ठा थी! उनका प्रतिदिन का नियम था कि वे रोज एक अध्याय का पाठ किया करते थे और राधा रानी जी को अर्पण करते थे! ऐसे करते करते उन्हे ४४ वर्ष बीत गए पर उन्होंने एक दिन भी ऐसा नही गया, जब राधारानी जी को भागवत का अध्याय न सुनाया हो!

31 अगस्त राधाष्टमी पर विशेष

एक दिन वे जब पाठ करने बैठे तो उन्हें अक्षर दिखायी ही नहीं दे रहे थे और थोड़ी देर बाद तो वे बिलकुल भी नहीं पढ़ सके! अब तो वे रोने लगे और कहने लगे हे प्रभु! में इतने दिनों से पाठ कर रहा हूँ फिर आपने आज ऐसा क्यों किया ! अब मै कैसे राधारानी जी को पाठ सुनाऊंगा ! संत जी का रोते-रोते उन्हें सारा दिन बीत गया ! कुछ खाया पिया भी नहीं क्योकि पाठ करने का नियम था और जब तक नियम पूरा नहीं करते तब तक खाते पीते भी नहीं थे ! आज नियम नहीं हुआ तो खाया पिया भी नहीं !

तभी एक छोटा-सा बालक आया और बोला- बाबा ! आप क्यों रो रहे हो? क्या आपकी आँखे नहीं है इसलिए रो रहे हो ? बाबा बोले- नहीं लाला! आँखों के लिए क्यों रोऊंगा! मेरा नियम पूरा नहीं हुआ, इसलिए रो रहा हूँ !

बालक बोला - बाबा ! मै आपकी आँखे ठीक कर सकता हूँ! आप ये पट्टी अपनी आँखों पर बाँध लीजिए! बाबा ने सोचा लगता है,वृंदावन के किसी वैध का लाला है कोई इलाज जानता होगा, बाबा ने आँखों पर पट्टी बांध ली और सो गए ! जब सुबह उठे और पट्टी हटाई तो सब कुछ साफ दिखायी दे रहा था ! उसे बड़ा आश्चर्य हुआ ! ये कैसे हो गया ! बाबा बड़े प्रसन्न हुए और सोचने लगे, देखूं तो उस बालक ने पट्टी में क्या औषधि रखी थी! जैसे ही बाबा ने पट्टी को खोला तो पट्टी में "राधा रानी जी" का नाम लिखा था ! इतना देखते ही बाबा फूट फूट कर रोने लगे और कहने लगे - वाह ! किशोरी जी आपके नाम की कैसी अनंत महिमा है !

मेरी बरसाने वारी राधे

श्री राधा रानी के नाम की महिमा अनंत है। श्री राधा नाम का कोई मन्त्र नही है! ये स्वयं में ही महा मन्त्र है! श्री राधारानी के नाम का इतना प्रभाव है की सभी देवता और यहाँ तक की भगवान भी राधा जी को भी भजते है, जपते है। आपने कभी किसी भगवान को किसी महाशक्ति के पैर दबाते हुए देखा है? नहीं न पर साक्षात भगवान श्री कृष्ण जी राधा रानी के चरणो में लोटने लगते है। आइये- किशोरी जी के नाम की महिमा को जानिए।

श्री राधे रानी बरसाने वाली है। सभी कहते है- **राधे, राधे, राधे, बरसाने वारी राधे .....**

हमारो धन राधा श्री राधा....२२२

क्योंकि श्री राधारानी साक्षात कृपा करने वाली है। वो गरजने वाली नही है। क्योंकि जो गरजते है वो बरसते नहीं। लेकिन हमारी प्यारी राधारानी बरसाने वारी है। वो बस अपनी कृपा भक्तों पर बरसाती रहती है। ब्रजमंडल की जो अधिष्ठात्री देवी हैं, वो हमारी श्यामा जी श्री राधा रानी हैं! आप जानते हो श्री राधारानी के नाम का जो आश्रय लेते है उसके आगे भगवान विष्णु सुदर्शन चक्र लेके चलते है और पीछे भगवान शिव जी त्रिशूल लेके चलते है। जिसके दांये स्वयं इंद्र वज्र लेके चलते है और बाएं वरुण देवता छत्र लेके चलते है। ऐसा प्रभाव है हमारी प्यारी श्री राधारानी के नाम का? बस ! एक बार उनके नाम का आश्रय ले लीजिये। और उन पर सब छोड़ दीजिये। वो जरूर कृपा करेंगी।

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश नफे की दावा (लालच) छोड़ो तो घाटा कभी पड़े ही नहीं।

श्राद्ध पक्ष विशेष

क्यों जरुरी है–श्राद्ध कर्म

श्राद्ध प्राचीन भारतीय संस्कृति का अंग है. अपने अपने पूर्वजों के प्रति श्राद्ध रूपी नैवेद्य अर्पण करने वाला १६ दिवसीय पावन पर्व- **'महालय श्राद्ध पक्ष' दिनांक 07 सितम्बर (रविवार) से 21 सितम्बर 2025 (रविवार) तक चलेगा.**

श्राद्ध के बारे में अनेक धर्मग्रन्थों में कई बातें बताई गई हैं. महाभारत के अनुशासन पर्व में श्री भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को श्राद्ध के सम्बन्ध में कई बातें बताई हैं. महाभारत में ये भी बताया गया है कि श्राद्ध की परम्परा कैसे शुरू हुई और फिर कैसे ये धीरे-धीरे जन मानस तक पहुँची.

महाभारत के अनुसार सबसे पहले श्राद्ध का उपदेश महर्षि निमि को महातपस्वी अत्रि मुनि ने दिया था. इस प्रकार पहले निमी ने श्राद्ध का आरम्भ किया उसके बाद अन्य महर्षि भी श्राद्ध करने लगे. धीरे-धीरे चारों वर्णों के लोग श्राद्ध में पितरों को अन्न देने लगे.

श्राद्ध पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रतीक है. दरअसल श्राद्ध पक्ष, श्रद्धा से बना है. इसलिये श्रद्धा, श्राद्ध का प्रथम अनिवार्य तत्व है या यों कहें कि पितरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करना ही श्राद्ध है. ब्रह्म पुराण में श्राद्ध की परिभाषा इस प्रकार की गई है- 'जो कुछ उचित काल (समय), पात्र एवं स्थान के अनुसार उचित शास्त्रानुमोदित विधि द्वारा पितरों को लक्ष्य करके (पितरों के निमित्त) श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को दिया जाता है, वह श्राद्ध कहलाता है. गरुड़ पुराण के अनुसार समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई दुःखी नहीं रहता है. श्राद्ध की साधारणतः दो प्रक्रियाएँ हैं. एक पिण्डदान दूसरी ब्राह्मण भोजन. (यदि परिस्थितिवश ब्राह्मण देव को घर पर भोजन कराने की व्यवस्था नहीं हो पाती है तो उस स्थिति में ब्राह्मण देव को भोजन सामग्री (सूखा अन्न-वस्त्र-दक्षिणा इत्यादि) दे सकते हैं. पितृ पक्ष के साथ पितरों का विशेष सम्बन्ध रहता है. पितृ शब्द का सम्बन्ध उन मृत लोगों से लिया जाता है जिनके कुल में हमने जन्म लिया होता है.

पितृ पक्ष भाद्रपद मास की पूर्णिमा से शुरू होता है और आश्विन् मास की अमावस्या यानि सर्वपितृ अमावस्या को पूर्ण होता है.

भाद्रपद मास के इस समय पर सूर्यदेव दक्षिणायन स्थित रहते हैं. शास्त्रों के मुताबिक इस अवसर पर चन्द्रमा भी पृथ्वी के काफी निकट होता है. चन्द्रमा के थोड़ा ऊपर पितृलोक माना गया है. भाद्रपद मास की पूर्णिमा को सूर्य रश्मियों पर सवार होकर कुतुप काल (दिन का आठवाँ मुहूर्त- दिन में लगभग ११:३० से १२:३०) में पितृ पृथ्वी-लोक में अपने पुत्र, पौत्र, नाते सगे सम्बन्धियों के यहाँ आते हैं और अपना भाग लेकर आश्विन् मास की शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य रश्मियों पर सवार होकर, अमावस्या तिथि पर सायंकाल को ही वापस अपने लोक लौट जाते हैं. मान्यता है कि इन दिनों में पितृ किसी भी रूप में आपके घर आ सकते हैं. इसलिये भूलकर भी पितृपक्ष में अपने दरवाजे पर आने वाले किसी भी साधु, संत, ब्राह्मण, अतिथि, पशु एवं पक्षी का निरादर न करें.

मनुष्य जब इस पृथ्वी पर जन्म लेता है, तभी उस पर तीन प्रकार के ऋण चढ़ जाते हैं. जिन्हें देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण कहा जाता है. मान्यता है कि जो व्यक्ति नियमपूर्वक श्राद्ध करता है, वह पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है. श्राद्ध पक्ष में किये गये दान और श्राद्ध से पितृ प्रसन्न होते हैं.

शास्त्रानुसार जिस तिथि को, जिस व्यक्ति की मृत्यु होती है, पितृ पक्ष में उसी तिथि को उस मृतक का श्राद्ध किया जाता है- उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति के माता जी का देहान्त तृतीया तिथि को हो जाता है तो पितृ पक्ष में उस मृतक (माता जी) का श्राद्ध भी तृतीया तिथि को ही किया जावेगा. यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु तिथि ज्ञात न हो, तो ऐसे किसी भी मृतक का श्राद्ध सर्वपितृ अमावस्या को किया जाता है.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

सच्चा सुख सांसारिक पदार्थों के भोग में नहीं है।
सच्चा आनन्द तो मन की शान्ति में है।

वर्तमान समय (कलयुग) में लोगों को प्रायः चार पीढ़ियों तक का स्मरण रहता है. पिता, पितामह, प्रपितामह एवं वृद्ध पितामह- इसी प्रकार माता, मातामह, प्रमातामह एवं वृद्ध मातामह, इसलिये चार पीढ़ियों का श्राद्ध कर्म करते हैं.

परन्तु शास्त्रविधि अनुसार जीव का सम्बन्ध पूर्व के २१ जन्मों तक रहता है. (सात जन्म- सपिण्डी, सात जन्म सोदकीय एवं सात जन्म सगोत्रीय).

पितरों की सद्गति के लिये प्रथम गया (बिहार) में (विष्णुपाद), द्वितीय चक्रतीर्थ (नेमिषारण्य) में (नाभि गया) एवं तृतीय बद्रीनाथ में (कपाल गया) जाकर तर्पण विधि एवं पिण्डदान किये जाने का विधान है. परन्तु अधिकांश लोग भ्रमवश बद्रीनाथ पिण्डदान करके आने के पश्चात् पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध कर्म नहीं करते हैं जो सही नहीं है. हम लोगों को अपने पितरों के यथा सामर्थ्य अनुसार वर्ष में दो श्राद्ध तो करने ही चाहिये- एक प्राणान्त तिथि- दूसरा महालय श्राद्धपक्ष की तिथि पर.

पितृपक्ष में कौए को भोजन कराने की परम्परा प्राचीन काल से है. पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है. कहा जाता है कि इस पक्ष में कौए को कराया भोजन सीधे पितरों को प्राप्त होता है अर्थात् अपने पितरों को भोजन कराना माना गया है. पितृपक्ष के दौरान ज्यादातर घरों में कौए को भोजन कराते हुए देखने को मिल जाता है.

'श्रद्धया दीयते यस्मात् तच्छादम्'

श्राद्ध से श्रेष्ठ संतान, आयु, अतुल ऐश्वर्य और इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है.

श्राद्ध से केवल पितृ ही तृप्त नहीं होते अपितु समस्त देवों से लेकर वनस्पतियाँ तक तृप्त होती हैं.

पितृों को श्राद्ध देने की एक विधि होती है, जिसका पालन करना सभी के लिये अनिवार्य होता है.

धना भाव में भी श्राद्ध की सम्पन्नता-

धन की परिस्थिति सबकी एक-सी नहीं रहती. कभी -कभी धन का अभाव हो जाता है, ऐसी परिस्थिति में जबकि श्राद्ध का अनुष्ठान अनिवार्य है, इस दृष्टि से शास्त्र ने धन के अनुपात में कुछ व्यवस्थाएँ की हैं-

(1) यदि अन्न, वस्त्र के खरीदने में पैसों का अभाव हो तो उस परिस्थिति में शाक के द्वारा श्राद्ध कर देना चाहिये.

तस्माच्छाद्धं नरो भक्तया शाकैरपियथाविधि।

(2) यदि शाक खरीदने के लिये भी पैसे न हो तो तृण-काष्ठ आदि बेचकर पैसे इकट्ठा करे और उन पैसों से शाक खरीदकर श्राद्ध करे. (अधिक श्रम से यह श्राद्ध किया गया है, अतः फल लाख गुना होता है.)

(3) देश विशेष और काल विशेष के कारण लकड़ियाँ भी नहीं मिलती. ऐसी परिस्थिति में शास्त्र ने बताया कि घास से श्राद्ध हो सकता है. घास काटकर गाय को खिला दें. यह व्यवस्था पद्मपुराण ने दी है. इसके साथ ही इस सम्बन्ध में एक छोटी-सी घटना प्रस्तुत की है-

एक व्यक्ति धन के अभाव से अत्यन्त ग्रस्त था. उसके पास इतना पैसा न था कि शाक खरीदा जा सके. इस तरह शाक से भी श्राद्ध करने की स्थिति में वह न था. आज ही श्राद्ध की तिथि थी. 'कुतुप काल' (दिन का आठवाँ मुहूर्त) भी आ पहुँचा था. इस काल के बीतने पर श्राद्ध नहीं हो सकता था. बेचारा घबरा गया- रो पड़ा- श्राद्ध करे तो कैसे करे? एक विद्वान ने उसे सुझाया- अभी कुतुप काल है शीघ्र ही घास काटकर पितरों के नाम पर गाय को खिला दो. वह दौड़ गया और घास काटकर गायों को खिला दी. इस श्राद्ध से उसे देवलोक की प्राप्ति हुई.

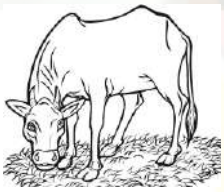

'एतत् पुण्य प्रसादेन गतोऽसौसुरमंदिरम्।

ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि घास का मिलना भी सम्भव नहीं होता. तब श्राद्ध कैसे करें? शास्त्र ने इसका समाधान यह किया है कि श्राद्धकर्ता को देश-काल वश जब घास का भी मिलना सम्भव न हो, तब श्राद्ध का अनुकल्प यह है कि श्राद्धकर्ता एकान्त स्थान में चला जाय और दक्षिण दिशा की ओर मुख करके दोनों भुजाओं को उठाकर पितरों से प्रार्थना करे.

'हे मेरे पितृगण! मेरे पास श्राद्ध के उपुयक्त न तो धन है, न धान्य आदि. हाँ, मेरे पास आपके लिये श्रद्धा और भक्ति है. इनके द्वारा आपको तृप्त करना चाहता हूँ आप तृप्त

हो जायँ. मैंने (शास्त्र की आज्ञा अनुरूप) दोनों भुजाओं को आकाश में उठा रखा है.

(विष्णु पुराण–3/14/30)

कृपया स्मरण रहे कि- साधन सम्पन्न व्यक्ति को वित्तशाठ्य (कंजूसी) नहीं करनी चाहिये. **'वित्तशाठ्यं न समाचरेत्'** अपने उपलब्ध साधनों से विशेष श्रद्धापूर्वक श्राद्ध अवश्य करना चाहिये.

उपर्युक्त अनुकल्पों से स्पष्ट प्रतीत हो जाता है कि किसी न किसी तरह श्राद्ध को अवश्य करें.

आइये पहिले जानें– क्या करना चाहिये ?

1. **'श्रद्धया इदं श्राद्धम'** अर्थात् श्राद्ध को करने के लिये सबसे पहिले जिस चीज की आवश्यकता होती है, वह श्रद्धा होती है. परिवार का जो भी व्यक्ति इस कार्य के लिये चुना जाता है उसके हृदय में अपने पूर्वजों को लेकर श्रद्धा का भाव जरूर होना चाहिये, श्रद्धा के बिना श्राद्ध का कोई महत्व नहीं होता. (स्मरण रहे कि 'भाव' में वो बल है जो निराकार को भी साकार कर देता है.)
2. श्राद्ध कर्म पितरों की मृत्यु तिथि के अनुसार करना चाहिये और जिन पितरों की मृत्यु तिथि ज्ञात न हो उनका श्राद्ध अमावस्या के दिन करना चाहिये.
3. श्राद्ध देने वाले व्यक्ति को उस समय पर पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये.
4. श्राद्ध की सामग्री के साथ तुलसी का प्रयोग जरूर करें. ऐसी मान्यता है कि तुलसी प्रयोग से पितरों को उच्च लोकों के गमन में तीव्रता मिलती है.
5. दक्षिण दिशा पितरों के आधिपत्य में आती है इसलिये पितरों का श्राद्ध सदैव इस दिशा की ओर देना चाहिये. श्राद्ध देने के पश्चात् दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके यदि पितृ गायत्री का पाठ किया जाये तो पितृ बहुत प्रसन्न होते हैं.
6. श्राद्ध देने वाले व्यक्ति को इस पक्ष में तुलसी, पीपल और सूर्य को जल जरूर चढ़ाना चाहिये.
7. श्राद्ध में विल्व-पत्र, मालती, चम्पा, नागकेशर, कनेर, कचनार, एवं लाल रंग के पुष्प का उपयोग वर्जित है- प्रयोग नहीं करना चाहिये. **इसलिये पितरों के श्राद्ध कर्म में सफेद पुष्प एवं सफेद चंदन उपयोग में लाना चाहिये.**
8. पितृपक्ष प्रत्येक वर्ष १६ दिन के लिये आता है तथा इन दिनों में पितरों से सम्बन्धित पूजाएँ करवाने का प्रावधान है जिसके कारण इस समय को पितृपक्ष के नाम से ही सम्बोन्धित किया जाता है.
9. श्राद्ध के दिन परिवार की महिलाओं को प्रातः शुद्ध होकर (स्नानादि से निवृत्त होकर) पितरों के लिये भोजन बनाना चाहिये साथ ही गाय, कौआ, श्वान, चींटी एवं अतिथि के लिये एक-एक निवाला निकालना चाहिये.
10. जो व्यक्ति किसी कारणवश एक ही नगर में रहने वाली बहन, जमाई और भानजे को श्राद्ध में भोजन नहीं कराता है, उसके यहाँ पितृ के साथ ही देवता भी अन्न ग्रहण नहीं करते साथ ही श्राद्ध के समय कोई भिखारी (याचक) आ जाय तो उसे आदरपूर्वक भोजन अवश्य कराना चाहिये.

आईये अब जानें श्राद्ध पक्ष में भूलकर भी क्या नहीं करना चाहिये ?

1. ऐसे ब्राह्मण से श्राद्ध बिल्कुल नहीं करवाना चाहिये जो अखाद्य पदार्थ एवं मादक पदार्थों का सेवन करता हो.
2. जो व्यक्ति श्राद्ध देता है उसे पूरे पितृ पक्ष में दिन के समय नहीं सोना चाहिये, शरीर पर तेल और साबुन नहीं लगाना चाहिये, मसूर की दाल, चना, मूली, जीरा, अलसी, माँस भक्षण, बासी भोजन, मदिरा पान और धूम्रपान बिल्कुल नहीं करना चाहिये.
3. श्राद्ध कर्म करते समय लोहे के रत्न का प्रयोग नहीं करना चाहिये.
4. श्राद्ध पक्ष में किसी भी जीव को दुःख नहीं देना चाहिये, ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति इस समय पर किसी कमजोर को सताता है या किसी जीव को कष्ट पहुँचाता है, उन सब बुरे कर्मों का भार पितरों को उठाना पड़ता है, जिससे पितृ

रुष्ट होते हैं और पितृदोष का निर्माण होता है.

5. केले के पत्ते पर भूलकर भी श्राद्ध नहीं दिया जाता, इस बात का ध्यान रखना चाहिये.
6. घर में आये किसी भी अतिथि या याचक का अपमान न करें और इस समय में नये वस्त्र या फिर किसी माँगलिक कार्य को न करें.
7. सायंकाल एवं रात्रि के समय श्राद्ध कर्म नहीं करना चाहिये. दिन के आठवें मुहूर्त (कुतुप काल) में पितरों के लिये दिया गया दान अक्षय होता है.

श्राद्ध के दिन ब्राह्मण देव को भोजन कराने के पूर्व निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें-

1. श्राद्धकर्म में यथा सम्भव गाय का घी, दूध या दही काम में लेना चाहिये. परन्तु यह ध्यान रखने का प्रयास अवश्य करें कि गाय को बच्चा हुए दस दिनों से अधिक हो चुका हो.
2. यथाशक्ति (यथा सामर्थ्य अनुसार) श्राद्धके दौरान स्वादिष्ट भोजन पकाया जाना चाहिये.
3. रेशमी, कंबल, ऊनी, लकड़ी, तर्ण, पर्ण, कुश आदि के आसन श्रेष्ठ हैं अतः ब्राह्मण देव को दक्षिण दिशा की ओर उपर्युक्त आसनों में से उपलब्ध एक आसन बिछाकर बिठाना चाहिये.
4. संकल्प लेकर ब्राह्मण देव को भोजन करावें.
5. श्राद्धकर्म में ब्राह्मण देव को भोजन सोने, चाँदी, काँस्य व ताँबे के बर्तन में कराना उत्तम है. इनके अभाव में पत्तल उपयोग करना श्रेयस्कर है.
6. श्राद्ध में ब्राह्मण देव को भोजन करवाते समय परोसने के बर्तन दोनों हाथों से पकड़ कर लाने चाहिये. एक हाथ से लाए अन्न पात्र से परोसा भोजन राक्षस छीन लेते हैं.
7. पितृ तब तक ही भोजन ग्रहण करते हैं, जब तक ब्राह्मण देव मौन रहकर भोजन करते हैं. इसलिये जब तक ब्राह्मण देव भोजन करें तब तक उन्हें मौन रहकर भोजन करने दें. भोजन कैसा बना है, यह भी न पूंछे, साथ ही ब्राह्मण देव को (श्राद्धकर्ता स्वयं की संतुष्टी के लिये) भोजन की प्रशंसा करने को विवश नहीं करना चाहिये.
8. ब्राह्मण देव को पूरी तृप्ति के साथ भोजन कराने के बाद उनके मस्तक पर तिलक करना चाहिये.
9. दक्षिणा या वस्त्र दान-यज्ञ की पत्नि दक्षिणा है. अतः ब्राह्मण देव को भोजन कराकर यथा शक्ति (यथा सामर्थ्य अनुसार) वस्त्र व दक्षिणा अवश्य देना चाहिये.
10. ब्राह्मण देव को भोजन के पश्चात् घर के द्वार तक पूरे सम्मान के साथ विदा करके आयें. क्योंकि ऐसा माना जाता है कि ब्राह्मणों के साथ-साथ पितृगण भी चलते हैं.
11. ब्राह्मण देव के भोजन करने के बाद ही अपने परिजनों को भोजन करायें एवं स्वयं भी भोजन करें.

श्राद्ध के अधिकारी-

पितरों की शांति हेतु श्राद्ध कर्म कौन-कौन कर सकता है, किसे करना चाहिये, जिससे उन्हें शांति मिले. शास्त्र में श्राद्ध के अधिकारी के रूप में विभिन्न व्यवस्थाएँ दी गयी हैं. इन व्यवस्थाओं के पीछे एक मात्र उद्देश्य यही रहा है कि श्राद्ध कर्म विलुप्त न हो जाय.

पिता का श्राद्ध करने का अधिकार मुख्य रूप से पुत्र को ही है. कई पुत्र होने पर अन्त्येष्टि से लेकर एकादशाह तथा द्वादशाह तक की सभी क्रियाएँ ज्येष्ठ पुत्र को करनी चाहिये. विशेष परिस्थिति में बड़े भाई की आज्ञा से छोटा भाई भी कर सकता है. यदि सभी भाइयों का संयुक्त परिवार हो तो वार्षिक श्राद्ध भी ज्येष्ठ पुत्र के द्वारा ही एक ही जगह सम्पन्न हो सकता है. यदि पुत्र अलग-अलग हों तो सभी को वार्षिक आदि श्राद्ध अलग-अलग अथवा किसी एक के यहाँ सम्मिलित होकर करना चाहिये.

यदि पुत्र न हों तो शास्त्रों से श्राद्धाधिकारी के लिये विभिन्न व्यवस्थाएँ प्राप्त हैं-

पुत्र के न होने पर पौत्र या प्रपौत्र भी श्राद्ध कर्म कर सकते हैं. पुत्र-पौत्र या प्रपौत्र न होने पर पुत्री का पुत्र श्राद्ध कर्म कर सकता है. इसके भी न होने पर भाई, भतीजा भी श्राद्ध कर्म कर सकता है. गोद लिया हुआ पुत्र भी श्राद्ध कर्म करने का अधिकारी होता है. इस क्रम में कोई न मिले तो माता के कुल के सपिण्ड को भी श्राद्ध करने का अधिकारी माना गया है यानि माता के कुल का व्यक्ति भी श्राद्ध कर सकता है. यदि किसी के पुत्र न हो और पति भी जीवित न हो तो ऐसी स्थिति में पत्नि भी दिवंगत पति की आत्मा की शांति हेतु श्राद्ध कर्म

कर सकती है. किसी के न होने पर पुत्री भी श्राद्ध कर्म कर सकती है. पुत्रियों में भी विवाहित पुत्री को वरीयता दी गयी है. सारांश यह है कि परिस्थितिवश पत्नि, पुत्री, या उस कुल की किसी भी स्त्री को अपने पितरों के श्राद्ध करने का अधिकार प्राप्त है. अधिकार के साथ धर्मशास्त्र भी यह अधिकार प्रदान करते हैं. इस विषय पर अनेकों तर्क व प्रमाण- धर्मशास्त्रों में बताये गये हैं.

पुराणों के अनुसार पितरों और देवताओं की योनि ही ऐसी होती है कि वे दूर की कही हुई बातें सुन लेते हैं, दूर की पूजा-अन्न भी ग्रहण कर लेते हैं और दूर की स्तुति से भी संतुष्ट होते हैं. इसके सिवाय ये भूत-भविष्य और वर्तमान सब कुछ जानते और सर्वत्र पहुँचते हैं. पाँच तन्मात्राएँ, मन, बुद्धि, अहंकार और प्रकृति- इन नौ तत्वों का बना हुआ उनका शरीर ऐसा ही करने की क्षमता रखता है.

सनातन काल से श्राद्ध की परम्परा चली आ रही है. इसका उल्लेख वेदों, पुराणों में मिलता है. ऋषि-मुनियों ने श्राद्ध के महत्त्व को गाया है. श्राद्ध से पितरों को तो शांति मिलती है बल्कि श्राद्ध करने वाला भी फल का भागी हो जाता है.

पितृ पक्ष में लोग गया जाकर अपने पितरों का तर्पण करते हैं. ऐसी मान्यता है कि बिहार की राजधानी पटना से १०० किलोमीटर दूर गया में पिंडदान करने से पूर्वजों की आत्माएँ तृप्त होती हैं. गया के फल्गू नदी के तट पर विष्णुपद मंदिर में पिंडदान किया जाता है. श्राद्ध करने वाले लोग गया जाकर मुण्डन कराने के बाद पिण्डदान करके पितरों का तर्पण करते हैं.

गया के बारे में कहा जाता है कि यह नगर भस्मासुर के वंशज 'गयासुर' राक्षस के शरीर पर स्थित है. ऐसी कथा प्रचलित है कि 'गयासुर' देवी-देवताओं पर अत्याचार करता था. उसके अत्याचार से देवता बहुत दुःखी रहते थे. फिर विष्णु भगवान ने उसके (गयासुर) जीवन को ही माँग लिया. गयासुर तैयार हो गया लेकिन उसने एक शर्त रखी कि प्रतिदिन उसके शरीर पर एक व्यक्ति के सिर के बाल एवं पिण्ड का दान किया जाना चाहिये. भगवान विष्णु ने उसकी यह शर्त मान ली और 'गयासुर' जमीन पर लेट गया, उसके बाद भगवान विष्णु ने उसके सीने पर पैर रखा जिससे वह मर गया. बताया जाता है कि विष्णु भगवान के पैर के निशान विष्णु मंदिर में आज भी मौजूद हैं. भगवान श्रीराम ने भी अपने पिता महाराजा दशरथ का भी श्राद्ध यहीं किया था. कहा जाता है कि गया में पितरों का पिंडदान करने से मनुष्य जिस फल का भागी होता है, उसका वर्णन करना मुश्किल है.

सारांश यह है कि जिस माता, पिता, दादा, दादी, प्रपितामह (परदादा), मातामही (परदादी) एवं अन्य बुजुर्गों के लाड़, प्यार, श्रम से कमाए धन एवं इज्जत के सहारे हम और आप सुखपूर्वक रह रहे हैं, आज जब उनका शरीर पाँच तत्व में विलीन हो गया है तो हमारा यह परम कर्त्तव्य बनता है कि पितृपक्ष में संशय रहित होकर, पूर्ण श्रद्धाभाव से श्राद्ध कर्म आदि सम्पन्न करें. मान्यता अनुसार पितृ ऋण के निवारण के लिए भी श्राद्ध किया जाना आवश्यक है. साथ ही साथ इन दिनों में ब्राह्मणों और गरीबों को दान अवश्य करना चाहिये साथ ही पशु-पक्षियों (विशेषकर- गाय, कुत्ते और कौवे) को भोजन कराना चाहिये.

वर्तमान समय में अधिकांश मनुष्य श्राद्ध को व्यर्थ समझकर उसे नहीं करते हैं. जो लोग श्राद्ध करते हैं उनमें कुछ तो यथाविधि नियमानुसार श्रद्धा के साथ श्राद्ध करते हैं. किंतु कुछ लोग तो रस्म-रिवाज की दृष्टि से श्राद्ध करते हैं. वस्तुतः श्रद्धा-भक्ति द्वारा शास्त्रोक्त विधि अनुसार किया हुआ श्राद्ध ही सर्वविधि कल्याण प्रदान करता है.

वराह पुराण में मार्कण्डेय जी कहते हैं कि- स्वयं पितृगण यह कहते हैं कि कुल में क्या कोई ऐसा बुद्धिमान, धन्य मनुष्य जन्म लेगा जो वित्त लोलुपता को छोड़कर हमारे निमित्त पिंडदान करेगा? सम्पत्ति होने पर जो हमारे उद्देश्य से ब्राह्मणों को धन-धान्य, वस्त्र आदि सामग्रियों का दान करेगा अथवा श्राद्ध काल में विनम्र चित्त से भक्ति कर श्रेष्ठ ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन कराएगा.

अत्रि संहिता का कहना है कि जो पुत्र, भ्राता, पौत्र अथवा दोहित्र आदि, पितृ कार्य (श्राद्धानुष्ठान) में संलग्न रहते हैं, वे निश्चय ही परमगति को प्राप्त होते हैं. यहाँ तक लिखा है कि जो श्राद्ध का अुनमोदन करता है, जो उसके विधि विधान को जानता है, जो श्राद्ध करने की सलाह देता है और जो अनुमोदन करता है इन सबको श्राद्ध का पुण्य फल मिल जाता है.

'उपदेष्टानुमन्ता च लोके तुल्य फलों स्मृतौ'

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी दिखाकर खाना शर्मिंदगी है। छुपाकर खाना गंदगी है। बाँटकर खाना बंदगी है।

भगवान् का दोस्त

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था, लोग मोलभाव कर रहे थे । एक सज्जन आदमी ने उसके पैर देखे, बहुत दुःख हुआ । वह भागकर गया, पास की एक दुकान से बूट ले करके आया और कहा बेटा! बूट पहन लो ।

लड़के ने फटाफट बूट पहने, बड़ा खुश हुआ और उस आदमी का हाथ पकड़कर कहने लगा, 'आप भगवान् हो?'

वह आदमी घबराकर बोला, 'नहीं-नहीं बेटा, मैं भगवान् नहीं ।'

फिर लड़का बोला, 'जरूर आप भगवान् के दोस्त होंगें···· क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान् को अरदास की थी कि भगवान् जी! मेरे पैर बहुत जलते हैं । मुझे बूट ले करके दो ।'

वह आदमी आंखों में पानी लिये मुस्कुराता हुआ चला गया, पर वह जान गया था कि भगवान् का दोस्त बनना ज्यादा मुश्किल नहीं हैं । उसके लिये कुदरत ने दो रास्ते बनाये हैं- १. देकर जाओ या फिर २. छोड़कर जाओ, साथ लेकर जाने की कोई व्यवस्था नहीं है ।

संकलित

बुढ़ापा-- जीवन का एक मीठा फल

बुढ़ापा जीवन का एक परिपक्व एवं मीठा फल होता है. इसे बोझ नहीं समझना चाहिये. बुढ़ापे में ज्ञान की परिपक्वता, अनुभव की मिठास, चिन्तन की उपयोगिता और जीवन जीने की गहराई होती है. बुढ़ापे में अगर क्रोध एवं अहंकार से निजात पा ले तो स्वास्थ्य ठीक रहता है और व्यक्ति आनन्द एवं प्रेम से सराबोर रहता है.

आत्मारूपी महल में एक साथ सुमति एवं कुमति का संगीत सुनायी देता है. कुमति ने आपके जीवन को दुखी बना दिया है; जबकि सुमति त्याग, वैराग्य एवं ज्ञान-ध्यान की भावना जगाकर जीवन को सुखमय, प्रेममय एवं शान्तिमय बना देती है.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

मृत्यु का अर्थ होता है, यहाँ न होना, न होना नहीं।

नाम जप की महिमा

श्री राजेन्द्रदास जी महाराज

ये विकार सीधे हमारे अंतःकरण को प्रभावित करते हैं, भैया ये तो उतरेंगे, कैसे बचोगे इससे, कैसे बचोगे,

तुम्ह पुनि राम राम दिन राती।
सादर जपहु अनँग आराती।।

दिन रात आदर पूर्वक राम राम करके देख लो, हिम्मत नहीं है किसी विकार की जो तुम्हारे हृदय पर उतर जावे, यह विकार घुसते ही इसलिए हैं कि तुम राम राम नहीं करते, भगवन नाम का आश्रय लो, हिम्मत है किसी विकार की, भाव एक सा मिला हो और एक सा भाव हो, एक सा स्वर हो, कीर्तन करो, देखो क्या आनंद आता है, अभी गौरांग लीला हुई कीर्तन में क्या सुख मिलता था, अद्भुत आनंद आपकी आप जानें, हम तो अपने आसन से वह दृश्य देखकर कथा सुनते थे, कीर्तन सुनते थे तो हमारे मन में तो कई दिन ऐसा आया कि कीर्तन ही होता रहे, लीला नहीं, यही सबसे बड़ा सबसे बड़ी लीला है, कीर्तन जब होने लग जाता है, अभी भी कथा में भी, कई बार कीर्तन में इतना रस आता है कि फिर लगता है कि नहीं आज तो कीर्तन ही रहने दो, कथा रहने दो, हो गई कथा, भगवान के नाम के जैसा माधुर्य और कहीं नहीं, मधुराति मधुर है भगवान का नाम, तो शंकर जी ने सोचा कि जैसे हम नाम निष्ठ हैं ऐसे ही शेष जी भी नाम निष्ठ हैं, भागवत जी में लिखा है कि उनकी इतनी नाम निष्ठा है शेष जी की कि वो १००० नाम तो रोज नए लेते हैं नए, प्रतिदिन एक नया सहस्त्र नाम लेते हैं भगवान का, और शेष समय पुराने सहस्त्र नामों का कीर्तन करते रहते हैं, कब से हैं शेष जी, कोई तिथि तारीख है? अरे उनका नाम ही है शेष, शेष माने सब कुछ के नष्ट होने के बाद भी जो बच जाते हैं, बाकी रह जाते हैं, इसलिए उनको शेष कहते हैं, उनका नाश तो है ही नहीं और वे अनंत काल से भगवान के नाम ले रहे हैं, आज भी भगवान के नामों की संख्या का पार वे नहीं पा सके हैं, और कैसे लेते हैं नाम, जानते हैं, झड़ी सी लग जाती है नाम की,

रसना निर्मल नाम मनहुं बरसत धारा धर

ऐसे नाम लेते हैं शेष जी, १००० मुखों से २००० जिव्हाओं से लगातार नाम लेते हैं, नाम लेते लेते उनको इतना रस आता है कि जैसे किसी लालची व्यक्ति की नजर बढ़िया मिठाई पर पड़ जाती तो उसके मोहड़े में पानी आ जाता है, ऐसे ही नाम की मिठास का अनुभव करते करते शेष जी को इतना आनंद आता है कि उनके लार आने लग जाती है, अब वो लार अधिक मुंह में आएगी, मुंह में पानी आएगा, लार आएगी तो बोलना मुश्किल हो जाएगा, तो वह जो लार है वो टपकने लग जाती है, अब शेष जी सोचते हैं कि टपकती हुई लार को यदि ऐसे करके समेटेंगे तो भगवान के नाम का एक अक्षर छूट जाएगा, तो लार बहती है तो बहने दो, लेकिन भगवान के नामाक्षर से हम वंचित ना हो जाएं, भगवान का आधा नाम भी क्यों छूटे हमसे, एक नाम भी क्यों छूटे, बहती है तो लार बहने दो, अच्छा एक बात बताओ, सर्प के मुख में विष होता है कि अमृत? विष होता है और उनके मुख से जो लार गिरती है वह एक कुंड के रूप में परिवर्तित हो जाती है, भागवत के पंचम स्कंध में लिखा है और वह अमृत कुंड बन जाती है, क्या बन जाती है वो लार, अमृत कुंड और उसका आस्वादन नारद जी सनकादिक भगवान करके भगवान के नाम प्रेम में मतवाले हो जाते हैं, सिद्ध लोग उसका पान करते हैं,

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्

सच्चा अमृत तो यही है, ये शंकर जी बताते हैं

तुम्हारे मुंह में जहर हो तो रहने दो राम राम करो

तो जहर की जगह अमृत की वर्षा होगी, नाम से बड़ा कोई अमृत नहीं है आहा हा, तो शेष जी को इसलिए

कंठ में रखते हैं कि हमारे पूज्य पहाड़ी बाबा महाराज कहते थे, बच्चा अभी तुम्हें धुना चेताना नहीं आता, धुना चेताना क्या है, बोले धुना चैतन्य करने के बाद एक बड़ा लक्कड़ मोटा होता है, उस लक्कड़ के सहारे एक उससे थोड़ा सा सटाकर के एक लक्कड़ रख दिया जाता है, उससे क्या होता है, तो बोले लौ लगी रहती है, अकेला धुना अकेला लक्कड़ अखंड नहीं होता है, लक्कड़ के सहारे लक्कड़ रख दो तो धुना अखंड हो जाता है, तो शंकर जी को अखंड धुन करनी है तो अकेले कैसे होगी, तो पांच मुख शंकर जी के और १००० मुख शेष जी के कितने हो गए, कितने हो गए, १००५, १००५ एक साथ कीर्तन करें कितना बढ़िया लगेगा, इसलिए मानव अखंड नाम स्मरण के लिए ही उन्होंने शेष जी को हृदय में विराजमान किया, अथवा एक महान नामनिष्ठ को अपनी छाती से लगा रखा है, रा कहकर मुंह खोला, म कहकर मुंह बंद कर लिया, रकार मकार के संपुट में विष को स्थापित कर लिया, परिणाम क्या हुआ,

नाम प्रभाव जान शिव नीको।
कालकूट फल दीन्ह अमी को ।।

भगवान ने उसको अपने कंठ में रोक लिया और वह भगवान का आभूषण बन गया, भगवान नीलकंठ हो गए, बोलो नीलकंठ भगवान की जय, भगवान नीलकंठ हो गए, अब यहां बड़ी सुंदर बात है, गले के नीचे क्यों नहीं उतरने दिया? मुख में जहर आएगा तो राम राम कैसे करेंगे, हृदय में जहर चला गया तो हमारे हृदय में तो श्री रघुनाथ जी विराजमान हैं, हमारे हृदय में तो श्री बालकृष्ण प्रभु विराजमान हैं, यह विष उनको पीड़ा देगा, उनको गर्मी पहुंचाएगा, ठाकुर जी कैसे रह पाएंगे, इसलिए योग बल से उसको अपने कंठ में ही रोक लिया, क्या हम ऐसा विचार करते हैं? अपने को भगवान का दास, भगवान का सेवक, भगवान का भक्त, वैष्णव तो मानते हैं पर काम क्रोध के जहर सीधे हमारे हृदय में ही उतरते चले जाते हैं, हमको कभी मन में आता है कि हमारे हृदय में सीताराम जी हैं, हमारे हदय में श्यामा श्याम हैं, यहां काम का जहर क्रोध का जहर लोभ का जहर नहीं उतरना चाहिए, कभी मन में आता है यहाँ द्वेष का जहर नहीं उतरना चाहिए, यहां कुटिलता का जहर नहीं उतरना चाहिए, कभी मन में आता है, अपने को भक्त कहते हैं और दूसरों को गालियां भी बकते हैं, हृदय में भी जहर है, यहां भी जहर ही है, झूठ बोलते हैं, गालियां बकते हैं, भगवान शिव शिक्षा दे रहे हैं भैया वैष्णवों सावधान आपके हृदय में ठाकुर जी हैं, यदि ऐसा आप हृदय से स्वीकार करते हैं तो इन विकारों को अपने हृदय में उतरने मत दो,

ब्रज और कुम्भ में क्या सम्बंध है

प्रयाग में पानी का महत्व है और ब्रज में मिट्टी का महत्व है, जब पानी और मिट्टी मिलते हैं तो एक आकार दे देते हैं, ऐसे ही जब प्रयाग और ब्रज मिलते हैं तो परमात्मा को भी एक सुंदर हृदय में आकार आता है, ब्रजवासी लोग पुराने सब सुनाया करते हैं कि कुम्भ जब समाप्त होता है तो काले घोड़े के रूप में ज्ञान गुदड़ी वृंदावन में प्रयाग पधारते हैं और धोली पर धूल धूसरित होकर के लेटते हैं, और जाते समय श्वेत अश्व के रूप में पधार जाते हैं, वाह, क्योंकि ये मोक्ष नगरी है प्रयाग, और ब्रज की ये कही है कि "मुक्ति कहे गोपाल सौं मेरी मुक्ति बता, ब्रज रज उड़ मस्तक लगे मुक्ति मुक्त हो जाय" तो ब्रज तो भगवान का घर है, मैं ये कहते हुए सम्बंध है, पर यह सम्बंध किसी को भी नीचा दिखाने के लिये नहीं, प्रयाग का अपना महत्व है, और ब्रज का अपना महत्व है, और दोनों का अद्वितीय सम्बंध है,

श्री पुंडरीक जी महाराज

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश त्याग, तितिक्षा, शुक्र और सब्र फकीरी के भूषण हैं।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 48वाँ वर्सी उत्सव मनाया गया

जयपुर ।मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उत्तराधिकारी महर्षि गुरुवर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 48वाँ वर्सी उत्सव (पुण्यतिथि) शनिवार 26 जुलाई से बुधवार 30 जुलाई 2025 तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में पूर्ण भक्तिमय वातावरण एवं श्रद्धाभाव से मनाया गया.

इस अवसर पर वर्सी महोत्सव के प्रथम दिन परम्परागत रूप से श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद्भगवद् गीता के पाठ रखे गये ।वर्सी महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न सेवा-प्रकल्पों का आयोजन अलग-अलग शहरों में किया गया ।

प्रतिदिन प्रात:काल और सायंकाल को सत्संग के आयोजन में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की महिमा का वर्णन पूज्य संतों द्वारा किया गया ।कार्यक्रम के अंतिम दिवस शनिवार को पाठों का भोग साहब हुआ तत्पश्चात् आम भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों प्रेमियों ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण कर अपना जीवन सफल किया ।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जलसमाधि दिवस मनाया गया

हरिद्वार। परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की पार्थिव देह को उनकी आज्ञानुसार हरिद्वार में 10 नं. घाट पर भगवती माँ गंगा की गोद में सुपुर्द किया गया था. उसी स्मृति को प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाता है. इस वर्ष भी जल समाधि दिवस शुक्रवार, 01 अगस्त को हरिद्वार में बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया गया.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी अशुभ कर्म दु:ख की जड़ है। इसलिए आप अशुभ कर्मो से दूर रहें। शुभ कर्मो के बीज बोएँ।

श्री वृन्दावन धाम में प्रेम मूर्ति सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का 119वां जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

वृन्दावन- वृन्दावन वह पवित्र भूमि है जहां राधाकृष्ण की भक्ति और प्रेम की रस धारा बहती है। यहां के पत्ते-पत्ते से राधा-राधा सुनाई पड़ता है। यहां का कण-कण ''किशोरी जू'' का प्रेम प्रदान करने का सामर्थ्य रखता है।

वृन्दावन के रसोपासना के सिद्धांत के अनुरूप वृन्दावन को प्राकृतिक धाम नहीं मानते हैं। ''दिव्य प्राकृतिक चिन्मय धाम'' मानते है। महाप्रलय में भी इसका नाश नहीं होता है क्योंकि यह भगवान की नित्य रास स्थली है, यह भगवान की नित्य विहार स्थली है और नित्य कहते ही उसी को है जिसका कभी नाश न हो।

श्री वृन्दावन धाम में तो एक रिक्शा चालक भी राह में दर्शनार्थी श्रद्धालुओं को ''राधे-राधे'' कहकर रास्ता (मार्ग) देने को कहता है। इस प्रकार आपके कर्ण से ''राधा-राधा'' का पवित्र नाम तो आपके भीतर गया। यही श्रवण भक्ति है।

जन्म दिन उन्हीं का मनाने चले है,
जिनकी शरण में रहकर पले हैं।
बनाया है करके, कृपा हमको जिसने,
उन्हीं के रहेंगे, उन्हीं के भले हैं।
जिनकी शरण में .....

उन्हीं का यशोगान करते रहेंगे,
जिनकी कृपा से फूले फले हैं।
जिनकी शरण में .....
उन्हें कैसे भूलें, बता दे कोई तो,
कि जिनकी दया से, सभी दुःख टले है।
जिनकी शरण में .....
न भूले कृपा को उनकी मेरा मन,
कि विषयों से हमको, बचाके चले हैं।
जन्मदिन उन्हीं का मनाने चले है,
जिनकी शरण में रहकर पले हैं।।

ऐसे महा महिमावंत श्री वृन्दावन धाम की दिव्य भूमि पर प्रेममूर्ति परमादरणीय सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का ११९वां जन्मोत्सव प्रेम प्रकाश मण्डल के पंचम पीठाधीश्वर वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य एवं पूज्य संत मण्डल की उपस्थिति में वृहद्ध रूप से श्रद्धा-उमंग-उत्साह के साथ भक्तिमय वातावरण में मनाया गया।

उत्सव का आयोजन रविवार ३ अगस्त २०२५ को वृन्दावन धाम में छटीकरा स्थित ''श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम'' में किया गया था। जन्म उत्सव स्थल (हॉल) को भव्य रूप से सजाया गया था। पूरे आश्रम को भव्य स्वरूप प्रदान करने के साथ-साथ ''प्रेम प्रकाश मण्डल'' के अन्य तीर्थस्थलों देवभूमि हरिद्वार, रामेश्वरम्, उज्जैन, धर्मशाला इत्यादि स्थित दर्शनीय स्थलों को चित्रपट के माध्यम से दर्शाया गया था।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में भगत दीपक कुमार, संत कैलाशराम, संत हरिदास जी, संत देव, संत राहुल, संत ढालूराम जी, संत कमल (जयपुर), संत सुमित जी, संत भोलाराम जी द्वारा स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज की महिमा एवं श्री बांकेबिहारी के भजनों का गायन किया गया जिस पर उपस्थित प्रेमीजन भाव-विभोर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गुरु से क्या पूछा जाता है ? मंत्र या राय। यदि राय तो बात बिगड़ जायेगी, अशान्ति आ जायेगी। गुरु से राय तब ही पूछनी चाहिए जब कोई शिष्य अर्जुन की तरह मुसीबत में फँस जाये, जब वह अपने निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ हो जाये तब ही राय लेनी चाहिये वरना नहीं।

होकर नृत्य करने लगे तत्पश्चात् पूज्य संत हरीओमलाल जी एवं पूज्य संत मनोहरलाल जी द्वारा प्रवचनों में पूज्य सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का यशोगान कर उनके जीवन पर प्रकाश डाला । अंत में पूज्य महाराज श्री ने अपनी अमृतमयी वाणी में पूज्य सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज की महिमा एवं वृन्दावन प्रेम का विस्तृत रूप से वर्णन कर उनके द्वारा गाया गया भजन–

भेनरु मुहिंजो प्रेम लगो, मुरलीअ वारे मोहन सां,
कलाधारी कृष्ण सां ।
भेनरु मुहिंजो प्रेम लगो, मुरलीअ वारे मोहन सां ।।

के साथ मंगलमूर्ति आचार्य प्रवर-नित्य वंदनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं परमादरणीय गुरुजनों के दिव्य श्रीचरणों में प्रार्थना की ।

इससे पूर्व परम पूज्य गुरुजनों की मूर्तियों के सम्मुख ५६ भोग पधराया गया साथ ही पूज्य महाराजश्री द्वारा माल्यार्पण कर संत मण्डल सहित दीप प्रज्जवलित कर केक काटकर जन्मोत्सव की बधाइयों का गान किया गया । जिस पर समस्त प्रेमीजन भावविभोर होकर नृत्य कर आनन्दित हुए । अंत में पूज्य महाराजश्री द्वारा पूज्य आचार्य प्रवर मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं पूज्य गुरुजनों के श्रीचरणों में प्रार्थना कर कार्यक्रम का समापन किया गया । तत्पश्चात् ११०० से भी अधिक संख्या में उपस्थित प्रेमीजनों द्वारा पंक्तिबद्ध होकर पूज्य महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त कर पूज्य संतो से प्रसाद लेते हुए आयोजित विशाल भण्डारें में प्रसाद ग्रहण किया गया ।

उक्त जन्मोत्सव कार्यक्रम में जयपुर, ग्वालियर, दिल्ली, आगरा, मुरैना, डबरा, कानपुर, पलवल, पिनगंवा, हथीन, हिसार एवं अन्य शहरों से प्रेमीगण आकर शामिल हुए ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

मेरे मन ! सार असार को समझने के लिये यह एक अच्छा अवसर मिला है ।
क्योंकि मनुष्य योनि ही सब योनियों से उत्तम मानी गयी है ।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का 119वां जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

जयपुर। प्रेम भक्ति, करुणा के सागर, कृष्णावतार सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का ११९वाँ जन्मोत्सव मंगलवार ०५ अगस्त से शनिवार ०९ अगस्त तक श्री अमरापुर दरबार जयपुर, सहित देश विदेश के सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों/मंदिरों में विविध आयोजनों के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया.

परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में श्री अमरापुर स्थान जयपुर में रक्षाबंधन के पावन पर्व पर सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज का जन्मोत्सव बड़े ही धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर पंचदिवसीय श्रीमद्भगद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का भोग पारायण हुआ। नित्य-नियम प्रार्थना के बाद सन्तों का सत्संग हुआ। इसके बाद परम पूज्य महाराजश्री ने अपनी अमृतमयी वाणी में संगत को अमृत वचनों का रसपान कराते हुए कहा कि सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज प्रेम और करुणा की साक्षात मूर्ति थे. भक्तों के अंर्तमन में प्रकाश और शांति फैलाने वाले गुरुवर स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज थे। आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से गुरु नाम की शिक्षा ले गुरु नाम का अभ्यास कर गुरु नाम की ज्योति को देश विदेश में फैलाया। अंतरात्मा के नेत्रों से कण-कण में भगवान श्रीकृष्ण के साक्षात दर्शन किये। अपने उपदेशों में स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज कहते थे कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज और सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हर पल उनके साथ रहते हैं और सदैव उनका मार्गदर्शन करते है।

इस अवसर पर दीप प्रज्जवलन कर एक विशाल केक काटा गया। महाभंडारे के आयोजन में हजारों प्रेमियों ने प्रसाद पाकर अपना जीवन सफल किया।

इस अवसर पर जनसेवा के कई कल्याणकारी कार्य भी सेवा मण्डलियों द्वारा किये गये.

प्रेमियों ने सन्त-महात्माओं को रक्षा सूत्र बांधे। पूज्य सन्तों द्वारा भी परम पूज्य महाराजश्री को रक्षा सूत्र बांधे गये।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का 33वाँ वर्सी उत्सव सम्पन्न

जयपुर। सोमवार ११ अगस्त को प्रेम भक्ति करुणा रस के शहंशाह सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का ३३वां पुण्यतिथि (वर्सी) महोत्सव देश विदेश स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया गया. इस अवसर पर विभिन्न सेवा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश दूसरे के दुःख में दुःखी मत हो, सेवा और पुरुषार्थ करो।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 25वाँ वर्सी उत्सव मनाया गया

धर्मशाला/जयपुर । मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का २५वाँ पुण्यतिथि (वर्सी) महोत्सव १५ से १६ अगस्त २०२५ तक श्री अमरापुर दरबार, जयपुर, सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में बड़े ही भक्तिभावपूर्ण वातावरण में परम्परागत कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया गया. परम पूज्य गुरुदेव स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला शहर में स्थित प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम पर पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर पंचदिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब व श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ रखे गये । प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल विशेष सत्संग सभाओं का आयोजन हुआ जिसमें सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज की महिमा का गुणगान किया गया । अंतिम दिवस पाठों के भोग साहब डाले गये एवं भण्डारें का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विभिन्न सेवाकार्यों का भी आयोजन किया गया ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

भगवान जगन्नाथ

भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार समूचे भारत ही नहीं वरन् विदेशों में भी बड़ी धूम-धाम व उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। श्री ब्रजमंडल में मथुरा (विशेषतः कृष्ण जन्म स्थान), श्री वृन्दावन धाम, गोकुल, बरसाना एवं नन्दगांव में भव्यतम रूप से मनाया गया। सभी मंदिरों में विशेष रूप से कृष्ण जन्मभूमि मथुरा की छटा निराली थी।

देश एवं विदेशों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी जन्माष्टमी का पावन त्यौहार पूर्ण मनोयोग से मनाया गया। विशेषतः अमरापुर स्थान जयपुर आकर्षण का केन्द्र रहा। हिमाचल प्रदेश स्थित धर्मशाला में प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम पर जन्माष्टमी का त्यौहार श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष वात्सल्य मूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सान्निध्य में उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। यहां स्थानीय प्रेमियों के साथ-साथ बाहर से आए प्रेमियों ने भी इस उत्सव का आनन्द लिया। इस सुअवसर पर भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बंधित बाल कलाकारों द्वारा नृत्य-नाटिकाएं प्रस्तुत कर समूचे वातावरण को कृष्णमय बना दिया। कार्यक्रम के अंत में पूज्य महाराजश्री द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण का वृतान्त एवं भजनों का श्रवण कर सभी प्रेमी मंत्रमुग्ध हो गए।

तत्पश्चात् मध्यरात्रि में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। इस अवसर पर बाल कलाकारों के उत्साहवर्धन हेतु पूज्य महाराजश्री द्वारा उन्हें आशीष स्वरुप पुरस्कार प्रदान किए गए।

नंदलाला गोपाला मोहन मुरली वाला
मोहन मुरली वाला, कृष्ण बंसी वाला
नंद के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की,
हाथी घोड़ा पालकी जय हो नन्द लाल की

आदि भजनों पर श्रद्धालुओं ने नाचकर अपनी खुशी व्यक्त की । अन्त में प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम समाप्त किया गया।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम संसार में धन एवं पदार्थ संग्रह करने के लिए नहीं आये हैं,
परन्तु नाम व शुभ कर्मो की पूँजी संग्रह करने के हेतु आये हैं।

अमरापुर गमन

श्री भगवानदास चुगानी

लखनऊ। दादा श्री भगवानदास चुगानी ९० वर्ष की आयु में अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक १७ अगस्त २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे । आपकी श्रद्धाजंली सभा में संत भोलाराम जी ने शामिल होकर पुण्य आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की ।

श्री जयपाल छाबड़ा

कोटा । श्री जयपाल छाबड़ा पुत्र श्री जियाराम छाबड़ा, ५७ वर्ष की आयु में दिनांक ०१ अगस्त २०२५ को श्री गुरूचरणारविंद में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

श्रीमती पदमा भेरवानी

खैरथल। प्रेम प्रकाश आश्रम खेरथल के प्रभारी सन्त हरी की पूज्य माताश्री श्रीमती पदमा भेरवानी धर्मपत्नि अमरापुरवासी श्री सुरेश कुमार भेरवानी, आयु ५५ वर्ष दिनांक ०७ अगस्त २०२५ को इस सांसारिक देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारी।

आप जीवनभर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की दरबार पर सेवा सुश्रुषा में सलंग्न रही । आपकी श्रद्धांजली सभा (तीये की बैठक) में परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने शामिल होकर आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की ।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

धुन:- हाल क्या है दिलों का....

दिल ये चाहे कि लिख दूँ कोई गीत मैं, प्यारे सत्गुरू हमारे की इस शान में,
तेरे भजनों की माला पिरोकर के मैं, गाउँ दिन रात सत्गुरू के सन्मान में ।।

करना लायक के शब्दों को चुन पाउँ मैं, भाव पुष्पों को माला में बुन पाउँ मैं-2,
धागा मन वाला मेरा टिका दो प्रभु-2, हरदम सिमरन तुम्हारा रहे ध्यान में,
तेरे भजनों की माला पिरोकर के मैं, गाउँ दिन रात सत्गुरू के सन्मान में ।।

मन में उठते हैं तूफाँ तेरे प्यार के, तुमपे रख दूँ मैं अपनी ये जां वार के-2,
इतनी शक्ति दो कर दूँ समर्पित ये मन-2, के नैना बहने लगें ऐंसे तूफान में,
तेरे भजनों की माला पिरोकर के मैं, गाउँ दिन रात सत्गुरू के सन्मान में ।।

हूँ अनाड़ी सुरों का ना कुछ ज्ञान है, मेरा सत्गुरू ही बस मेरी पहचान है-2,
अमरापुर पे ही मुझको सदा मान है-2, रहना सतनाम साक्षी के ही गान में,
तेरे भजनों की माला पिरोकर के मैं, गाउँ दिन रात सत्गुरू के सन्मान में ।।

लिखना चाहूँ तो चल ही ना पाऐ कलम, ज्यों तेरे दर्शन बिना सुस्त रहते कदम-2,
तेरे कदमों में 'वधवा' है करता नमन-2, कागज कोरा ना रह जाऐ अरमान में,
तेरे भजनों की माला पिरोकर के मैं, गाउँ दिन रात सत्गुरू के सन्मान में ।।

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,
समालखा मण्डी, हरियाणा

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सम्बन्धों की तार बहुत लम्बी होती है। रिश्तों की गहराई अगाध होती है।
अपनेपन की तीव्रता व अर्पण का भाव हो तो फिर कोई भी दूर नहीं।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम अगस्त 2025 से जनवरी 2026 तक

12 से 30 अगस्त 2025	धर्मशाला
31 अगस्त 2025	यात्रा
1 सितम्बर 2025	कुरुक्षेत्र (भन्डारा)
2 सितम्बर 2025	हथीन
3 सितम्बर 2025	भोपाल
4 सितम्बर 2025	उज्जैन
5–6 सितम्बर 2025	इन्दौर
7 सितम्बर 2025	दिल्ली
8 से 13 सितम्बर 2025	अनिर्णीत
14–15–16 सितम्बर 2025	जयपुर (दादी वसी सत्संग)
17 से 19 सितम्बर 2025	ब्यावर
20 से 22 सितम्बर 2025	तिरोड़ा, गोंदिया
23–24 सितम्बर 2025	बालाघाट
25–26 सितम्बर 2025	सिवनी
27–28 सितम्बर 2025	भंडारा
29 सित. से 1 अक्टूबर 2025	धमतरी, दल्ली राजहरा
2 से 3 अक्टूबर 2025	बिलासपुर
4 से 5 अक्टूबर 2025	कोरबा
6 से 8 अक्टूबर 2025	भाटापारा
9 से 11 अक्टूबर 2025	रायपुर
12 से 14 अक्टूबर 2025	पलवल
15 अक्टूबर 2025	हथीन
16 से 17 अक्टूबर 2025	पिनगवां
18 अक्टूबर 2025	अजमेर (धनतेरस)
19 से 23 अक्टूबर 2025	जयपुर (दीपावली)
23 अक्टूबर 2025	यात्रा
24 से 26 अक्टूबर 2025	पूना
27 से 28 अक्टूबर 2025	हरिद्वार
29 अक्टूबर 2025	यात्रा
30 अक्टूबर 2025	जयपुर (गोपष्टमी महोत्सव)
31 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2025	सीकर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

ज्ञानवान् महात्मा लोग समस्त सांसारिक कार्यों को करते हुए दिखलाई जरूर पड़ते हैं परन्तु वे सदा माया से निर्लिप्त रहते हैं।

02 से 05 नवम्बर 2025	कोटा
06 नवम्बर 2025	यात्रा
07 नवम्बर 2025	राजकोट
08 से 09 नवम्बर 2025	भावनगर
10 से 11 नवम्बर 2025	जामनगर
12 से 13 नवम्बर 2025	गांधीधाम
14 नवम्बर 2025	यात्रा
15 से 17 नवम्बर 2025	दिल्ली
18 से 19 नवम्बर 2025	गया (पिंडदान)
20 से 22 नवम्बर 2025	काशी
23 से 25 नवम्बर 2025	प्रयागराज
26 नवम्बर 2025	अयोध्या
27 से 28 नवम्बर 2025	लखनऊ
29 से 30 नवम्बर 2025	जयपुर
01 दिसम्बर 2025	अजमेर (प्रातःकाल गीता जयंती उत्सव)
01 दिसम्बर 2025	भीलवाड़ा (सायंकाल सत्संग)
02 से 03 दिसम्बर 2025	नसीराबाद, केकड़ी
04 से 06 दिसम्बर 2025	अहमदाबाद
07 से 09 दिसम्बर 2025	सूरत
10 से 31 दिसम्बर 2025	अनिर्णीत
01 से 03 जनवरी 2026	मुम्बई
04 से 05 जनवरी 2026	लोनावाला
06 से 07 जनवरी 2026	पिम्परी
08 जनवरी 2026	यात्रा
09 से 13 जनवरी 2026	मनीला (विदेश यात्रा)
14 जनवरी 2026	यात्रा
15 से 16 जनवरी 2026	चैन्नई
17 से 19 जनवरी 2026	श्री रामेश्वरम धाम

व्रत–पर्व–उत्सव

25 अगस्त 2025–सोमवार– झूलेलाल चालीहा समापन,
27 अगस्त 2025–बुधवार– श्री गणेश चतुर्थी
29 अगस्त 2025– शुक्रवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
31 अगस्त 2025–रविवार– श्री राधाष्टमी, सगड़ा बंधण
03 सितम्बर 2025–बुधवार– एकादशी
06 सितम्बर 2025–शनिवार– अनन्त चर्तुदशी, भगवान झूलेलाल अर्न्तध्यान दिवस
07 सितम्बर 2025–रविवार– पूर्णिमा, श्राद्ध पक्ष प्रारंभ, चन्द्रग्रहण
10 सितम्बर 2025–बुधवार– गणेश चर्तुर्थी
14 सितम्बर 2025–रविवार– महालक्ष्मी व्रत सगिड़ा छोडण
17 सितम्बर 2025–बुधवार– एकादशी
21 सितम्बर 2025– रविवार– सर्वपितृ अमावस्या
22 सितम्बर 2025–सोमवार– शारदीय नवरात्रा प्रारम्भ
23 सितम्बर 2025– मंगलवार– चन्द्र दर्शन, असूचण्ड
27 सितम्बर 2025– शनिवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
30 सितम्बर 2025– मंगलवार– श्री दुर्गाष्टमी

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश नफे की दावा (लालच) छोड़ो तो घाटा कभी पड़े ही नहीं।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

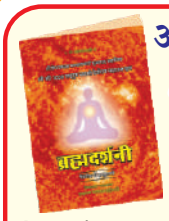

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं जुलाई २०२५ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

प्रभू का सब हुकम पछाने, मन में हौं मैं अल्प न आने।
कर्म करे सब हरि को अर्पन, धर्म दया हो भक्ती सम्पन्न।
पाप कपट छल दम्भ न द्रोहा, राखे मत्सर मान न मोहा।
हारे आप न और हरावे, हो निर्मान हरी गुण गावे।
निमष तजे नहिं हरि पद वासा, कह टेऊँ सो है हरिदासा।।6 ।।

हिन दशपदीअ में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज हरिदास जो, हरीअ जो, हरीअ जे दास/शेवक/नौकर जो वर्णनु कंदे चवनि था,"जेको परमेश्वर जा सभु हुकुम/आज्ञाऊं/आदेश सुञाणे थो, मञे थो; जेको पंहिंजे मन में थोरी बि 'मां', 'मां' नथो करे, अहंकारु नथो करे; जेको पंहिंजा सभई कर्म भगवान खे अर्पणु करे थो; जंहिं में धर्म ऐं दया जी भावना आहे, जो भगितीअ सां संपन्नु आहे ; जंहिं में पाप, कपट, छल, पाखंड, घमंड ऐं डोह जी भावना कान्हे ; जहिंजे मन में ईर्ष्या, मान जी इच्छा ऐं मोह कोन्हे, जेको ब्यनि खे हाराइण जे बदिरां पाणु हारजणु पसन्द करे थो; जेको निर्मानु (मानु न चाहींदडु) बणिजी प्रभूअ जा गुण गाए थो ; जेको सदाईं ईश्वर जे चरणनि में वेठो हूंदो आहे ऐं हिक पलु बि उन्हनि चरणनि खे कोन थो छडे; उहो ई हरिदासु आहे."

जेको हरीअ जो, ईश्वर जो, भगवान जो दासु आहे, उन खे 'हरिदास' चयो वियो आहे. 'दास' जो अर्थु आहे शेवकु, नौकरु, चाकरु. परमेश्वर जी तन, मन, धन सां शेवा कंदडु निमाणो पुरुषु हरिदासु हूंदो आहे. भगितीअ जे खेत्र में पहिरीं भगवान जी शेवा करणु ज़रूरी हूंदो आहे. शेवा ई भगिती हुअण करे हर तरह सां प्रभूअ जी शेवा करणु भक्त जो कर्तव्यु हूंदो आहे. इन लाइ पाण खे निमाणो बणाइणो पवंदो आहे. नम्रता सां ईश्वर जे हुकुम ते, मर्ज़ीअ ते हलिणो पवंदो आहे. दास खे पंहिंजा सभई कर्म ईश्वर खे अर्पणु करणु घुरिजनि. संत कबीर जो हिकु दोहो आहे, जंहिं में भगितीअ जी पराकाष्ठा मिले थी-

कबीर कूकर राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।
गले हमारे जेवरी, जिति खेंचै तहँ जाऊँ।।

पाण खे प्रभूअ जो 'कूकर' (कुतो) सडाइणु भगितीअ जी पराकाष्ठा/चरम-सीमा आहे. 'जेवरी' मानॾ नोड़ी, रस्सी. प्रभूअ जेडांहुं छिके वठी वञे, भक्त/शेवक खे, दास खे ओडांहुं वञिणो आहे. हरीअ जे दास खे पाणु अर्पणु करिणो पवंदो आहे प्रभूअ खे. इहा ई 'दास्य-भगिती' आहे. शेवा करणु इन जो मुख्यु गुणु आहे. भगवान ऐं गुरूअ जो दासु बणिजी शेवा करणु ई दास्य-भगिती आहे. हनुमानु, लक्ष्मण ऐं सीता जी राम-भगिती इन प्रकार जी आहे. (हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.
– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)